चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

श्रावण-भाद्रपद, युगाब्द 5126, अगस्त 2024

हिन्दुत्व पर वार भारतीयता पर प्रहार

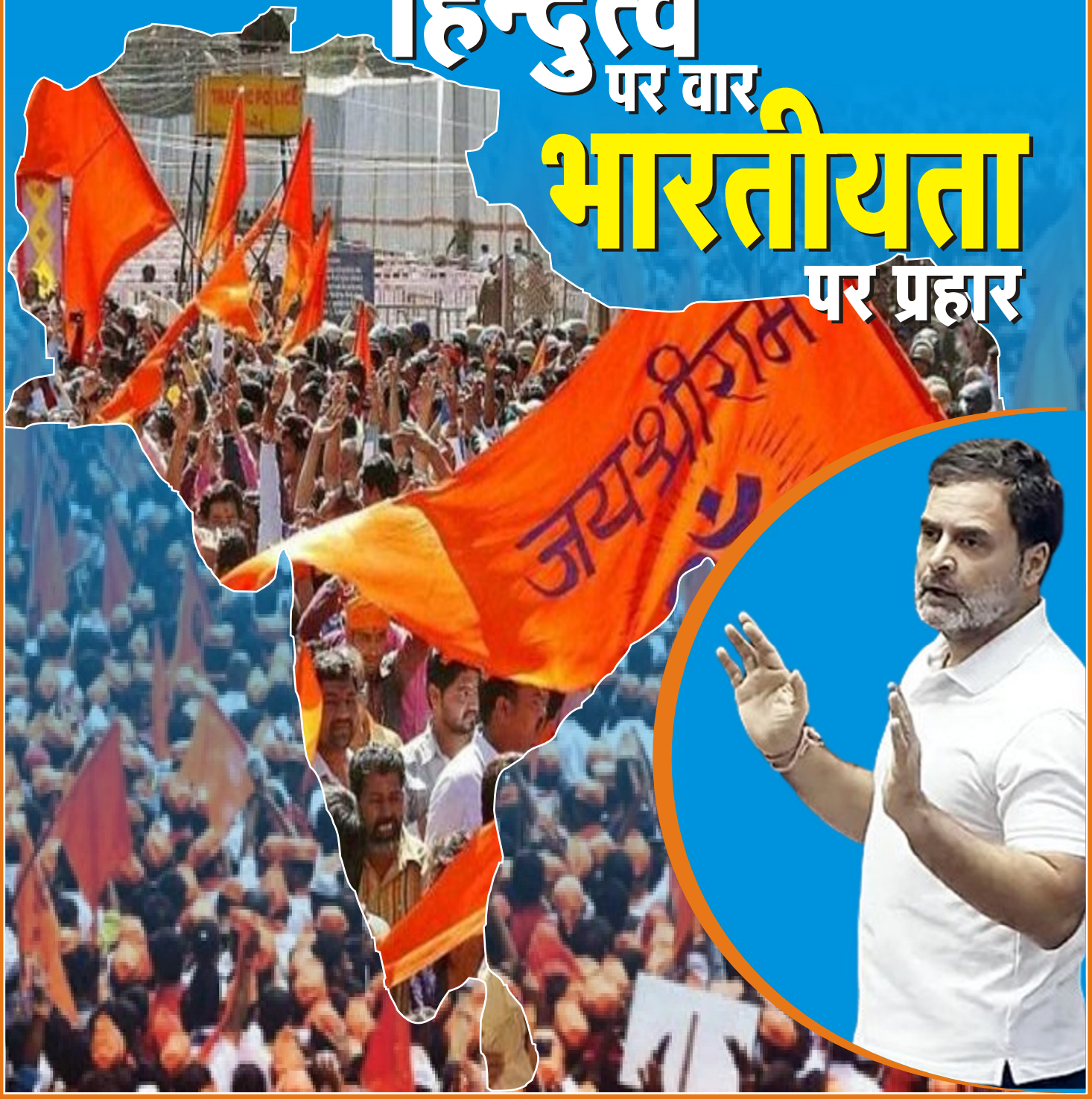

हिन्दू भारत की आत्मा है

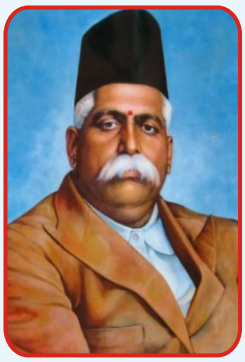

हिंदू धर्म और भारतीय राष्ट्रीयता एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। हिंदू धर्म भारत की आत्मा है। भारतीय समाज को एकजुट करने और उसे सशक्त बनाने के लिए हिंदू धर्म के मूल्यों का पालन करना आवश्यक है।

डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार
आद्य सरसंघचालक

वे सभी हिंदू हैं, जो हमारे देश एवं इसके लोगों की एकता एवं पवित्रता के साथ ही हमारे पूर्वजों को महान राष्ट्रीय नायकों के रूप में देखते हैं। वे भी हिंदू हैं, जो हमारे सांस्कृतिक जीवन के उदात्त मूल्यों को मान्य करते हैं।

हो.वे. शेषाद्रि, पूर्व सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

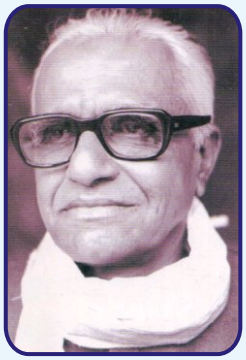

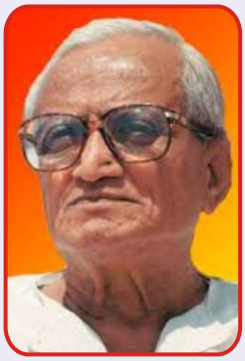

हिंदू वृत्ति बालादपि सुभाषितम् ग्राह्यम् की है। सभी का अध्ययन करना और उसमें से नीर-क्षीर विवेक से यह तय करना कि क्या ग्राह्य है और क्या त्याज्य। यह ज्ञान के सभी क्षेत्र के लिए लागू है, चाहे यह क्षेत्र विज्ञान का हो, तंत्रज्ञान, तत्व ज्ञान, दर्शन या कलाओं का हो।

दत्तोपंत ठेंगड़ी, संस्थापक
भारतीय मजदूर संघ

भारत में रहने वाला हर व्यक्ति हिंदू है। चाहे उसकी धार्मिक आस्थाएं कुछ भी हों। जो कोई भी इस देश से प्रेम करता है और इसकी प्रगति चाहता है, वह हिंदू है।

मोहन राव भागवत
सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

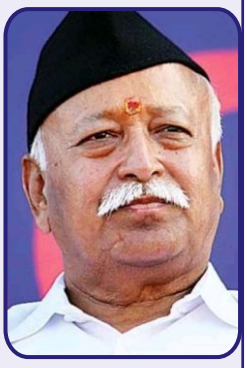

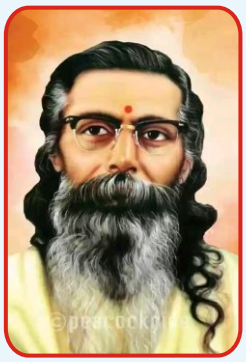

हिंदू धर्म एक व्यापक और गहन अवधारणा है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक पहचान का प्रतिनिधित्व करती है। यह एक जीवन शैली है, जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति के मूल्यों पर आधारित है।

श्री गुरु जी, द्वितीय सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

हिंदू धर्म को एक जीवन शैली और मूल्य प्रणाली के रूप में देखा जा सकता है, जो मानवता, नैतिकता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है।

अशोक सिंघल
पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
विश्व हिंदू परिषद

हिंदू होने का अर्थ केवल एक धर्म का अनुयायी होना नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण जीवन शैली है जो भारतीयता और भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती है।

कुप्. सी. सुदर्शन
पूर्व सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अगर किसी को ऐसा लगता है कि हिंदुत्व को छोड़ देने से राष्ट्रीय दृष्टि से आगे अच्छा परिणाम होगा, तो वह पूर्ण भ्रम में है। हमें आगे जो अर्जित अवस्था प्राप्त करनी है, वह हिंदू राष्ट्र के नाते ही प्राप्त करनी है।

लोकमान्य तिलक

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

मातृवन्दना

वर्ष: 32 अंक : 08 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश), श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द 5126, अगस्त 2024

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री संजय कुमार
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा
98050 36545

सह सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सम्पादक मण्डल
मीनाक्षी सूद, डॉ. उमेश मौदगिल,
डॉ. जय कर्ण, डॉ. सपना चंदेल,
हितेन्द्र शर्मा

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹25
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा

इस अंक में...

संपादकीय	हिन्दुओं पर हिंसा का आक्षेप असहनीय	5
बजट विशेष	बजट में रोजगार और आर्थिक ...	6
प्रेरक प्रसंग	बिटिया प्यारी...	7
आवरण	हिन्दुत्व पर प्रहार राष्ट्र की आत्मा..	8
आवरण	सनातन एवं हिन्दुत्व का...	10
महिला जगत्	बलिदानी पिता की वीर पुत्रियां...	12
संगठनम्	2056 शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा...	13
देश प्रदेश	2024 में लागू हुए नए कानून...	15
स्वजागरण	रूपधारी धर्म...	16
देवभूमि	रामपुर के पवन धंगल को कीर्ति चक्र...	17
लोक संस्कृति	किन्नर कैलाश पर बनी...	19
स्वतंत्रता दिवस	हिमाचल प्रदेश के स्वतंत्रता नायक	20
विविध	नालंदा का गौरवशाली इतिहास...	22
कृषि	वर्षा से अल्टरनेरिया लीव...	23
काव्य जगत्	हिन्दू को जगना होगा...	24
स्वास्थ्य	कांगड़ा चाय से मधुमेह पर नियंत्रण...	25
पर्यावरण	हिमालय में कम हो रहा बर्फ क्षेत्र...	26
पुण्य स्मरण	हंसकर मृत्यु को अपनाने वाले...	27
विश्व दर्शन	यूक्रेन की मारिया बनी कर्णेश्वरी...	28
समसामयिकी	कारगिल युद्ध में हिमाचल प्रदेश...	29
घूमती कलम	रामचरित मानस, पंचतंत्र..	30
प्रतिक्रिया	हिन्दुत्व सौहार्द का परिचयात्मक..	31
युवा पथ	15 साल का वरूण विदेश से...	33
बाल जगत	जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन	34

सुभाषित

हिन्दव: सोदरा: सर्वे, न हिन्दू: पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्र: समानता।।
भावार्थ : सब हिन्दू भाई है, कोई भी हिन्दू पतित नहीं है।
हिंदुओं की रक्षा मेरी दीक्षा है, समानता यही मेरा मंत्र है।

पाठकीय...

महोदय,

सादर नमस्कार। 'मातृवन्दना' पत्रिका का आषाढ़-श्रावण अंक 'मर्यादा एवं संयम से कर्तव्य पालन ही धर्म संस्कृति की पहचान' पढ़ने का अवसर मिला। इस अंक के अध्ययन से अपार आनन्द एवं सन्तोष प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण पत्रिका का कलेवर हिन्दू मानस में सांस्कृतिक चेतना को जगाते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य के सभी विषयों का बोध करवाता है। इस अंक में सभी आयु वर्ग को ध्यान में रखा गया है, तथा आदरणीय सर संघ चालक जी के विचारों से हमें अवगत करवाया गया है। महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी के जीवन चरित्र से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग निश्चित रूप से भावी राष्ट्र के चिन्तकों को एक नई दृष्टि प्रदान करता है। इस अंक में हिन्दू धर्म के प्रति नकारात्मक पक्ष को उजागर करते हुए जो समाधान सुझाए गए हैं वे निश्चित रूप से हमारा मार्गदर्शन करते हैं। इसी कड़ी में जहां मुफ्तखोरी पर चिन्तन किया गया है वहीं हिमाचल में महिलाओं के द्वारा स्वरोजगार के लिए किए जा रहे प्रयासों को भी प्रमुखता के साथ साझा किया गया है। संगठन से जुड़े क्रिया कलापों से अवगत करवाना, मातृवन्दना संस्थान द्वारा साहित्य संवाद का आयोजन करना, गावों के इतिहास पर जोर सहित श्रावणी पूर्णिमा का महत्व एवं माधवी लता का आम्र वृक्ष से विवाह इत्यादि सांस्कृतिक जीवन से जुड़े पहलुओं पर लेखकों के विचार निश्चित रूप से ज्ञान पिपासुओं की पिपासा को शान्त करते नजर आते हैं। लोक संस्कृति में कांवड़ यात्रा तथा विविध में प्राचीन भारतीय शिक्षा की विशेषता पर निबन्ध, कृषि शीर्षक के अन्तर्गत जामुन का महत्व , काव्य जगत में डॉ.उमेश प्रताप शुक्ल का 'आग्नेय गीत', डॉ.राजीव डोगरा का 'आस्तीन के सांप', रवीन्द्र कुमार शर्मा का 'सब पैसों का खेल; शीर्षक से लिखित काव्य जनचेतना की जागृति का साधन है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण विषय यह है कि मातृवन्दना पत्रिका स्वास्थ्य, पर्यावरण, पुण्य स्मरण, योग, समसामयिकी, नवाचार, युवा पथ, बाल-जगत इत्यादि शीर्षकों से प्रत्येक वर्ग का ध्यान रखते हुए मासिक पत्रिका की समाजोपयोगिता की दिशा में निरन्तर बढ़ रही है।

डॉ.अमनदीप शर्मा, प्रधान सम्पादक,
हिमसंस्कृतवार्ता: दैनिक संस्कृत समाचार

महोदय,

मातृवंदना में हमेशा की तरह अच्छी सामग्री लेख कविताएं और ज्ञान बढ़ाने वाली जानकारी पढ़ने को मिल रही है खासकर राष्ट्रीय और हिमाचल प्रदेश के सामाजिक मुद्दों पर सटीक और निष्पक्ष तथा राष्ट्रवाद से प्रेरित रचनाओं का प्रकाशन सराहनीय है। पत्रिका में लोक संस्कृति और मंदिरों से संबंधित विशेष जानकारी उपयोगी होती है। बच्चों के लिए अधिक सामग्री पत्रिका में शामिल की जानी चाहिए ताकि नई पीढ़ी को भी इस माध्यम से शिक्षा और संस्कार प्रदान किये जा सकें। हिमाचल प्रदेश के सामाजिक धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों पर अधिक सामग्री की जरूरत है ताकि प्रदेश के विभिन्न धर्म स्थलों घटनाओं इतिहास लोक संस्कृति परंपराओं और जनजीवन के बारे में भी प्रामाणिक जानकारी मिल सके।

मातृवंदना के पिछले अंकों में अच्छे आलेख पढ़ने को मिले हैं। श्रीराम मंदिर अयोध्या पर आधारित विशेषांक संग्रहणीय बन पड़ा है। अगर यह पत्रिका पुस्तक विक्रेताओं और बस अड्डों तथा न्यूज़ एजेंसी आदि के पास भी विक्रय के लिए उपलब्ध हो तो इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जा सकता है और प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भी यह एक अच्छी पहल मानी जा सकती है।

अनु ठाकुर शोधार्थी
संस्कृत विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 **7650000990**

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को स्वतंत्रता दिवस व रक्षाबन्धन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस अगस्त 2024

स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
पारसी नववर्ष	16 अगस्त
हरियाली तीज	19 अगस्त
रक्षाबन्धन	19 अगस्त
नाग पंचमी	21 अगस्त
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	23 अगस्त
गणेश चतुर्थी	26 अगस्त
विश्व संस्कृत दिवस	31 अगस्त

संपादकीय

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

हिन्दुओं पर हिंसा का आक्षेप असहनीय

भारत का हिन्दू समाज आदिकाल से ही सहिष्णु और शान्तिप्रिय रहा है। सत्य, अहिंसा, धैर्य, दया, क्षमा, सहिष्णुता और समानता हमारे धर्म के मुख्य लक्षण हैं। आस्तिक भाव रखने वाला और सनातन धर्म के गुणों एवं नियमों का परिपालन करने वाला हिन्दू समाज स्वभाव से ही अहिंसक प्रवृत्ति वाला है। महाभारत के अनुशासन पर्व में उल्लेख है कि सब प्राणियों के प्रति जो दयाशील है, सबके साथ जिसका समता एवं प्रेम भरा व्यवहार है और जो सब प्राणियों को आत्मवत् देखता है, वही वास्तव में धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। हिन्दुत्व समझौते और सहयोग के लिए प्रयत्न का प्रतिनिधित्व करना है। इसका कोई एक ऐसा नियत धर्म-विश्वास नहीं है जिस पर इसका जीवन अथवा मृत्यु निर्भर हो। हिन्दू की दृष्टि में प्रत्येक धर्म अपने आप में सच्चा है, पर केवल तभी जबकि उसके अनुयायी सच्चाई और ईमानदारी से उसका पालन करते हों। यदि किसी विशेष धर्म के अनुयायी अथवा राजनीति से प्रेरित धार्मिक अथवा राजनीतिक नेता निरन्तर हिन्दू धर्म का तिरस्कार करते रहेंगे तो हिन्दू समाज कब तक संयम और सहनशीलता के दायरे में स्वयं को समेटे रहेगा। आज भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म की जिस प्रकार उपेक्षा की जा रही है, यह भविष्य के लिए गहरी चिंता का सबब बन गई है। धर्मशास्त्रों में मन, वचन, कर्म से हिंसा को त्यागने की बात कही गई है किन्तु इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि आत्मरक्षा, धर्मरक्षा तथा राष्ट्र रक्षा हेतु प्रत्येक व्यक्ति को सजग रहने की आवश्यकता है।

हाल ही में उत्तराखंड के उपचुनाव में कांग्रेस दल के उम्मीदवार के जीतने पर उनके समुदाय विशेष के समर्थकों द्वारा जिस प्रकार का जश्न मनाया गया वह हिन्दुओं को सचेत करने के लिए पर्याप्त है। पूर्व में कश्मीर में भडक़ाऊ नारों और पत्थरबाजी की बानगी इस जश्न में दिखाई दी। इस दौरान हिन्दुओं के घरों पर पत्थरबाजी और तोड़ फोड़ ने यह प्रमाणित कर दिया है कि हिन्दुस्तान के नागरिक होते हुए भी एक समुदाय के लोग यहां के बहुसंख्यक समाज को आतंकित करने का ही लक्ष्य निर्धारित किए हुए आगे बढ़ रहे हैं। इस आक्रामक सभ्यता के समक्ष हिन्दू समाज कब तक मौन धारण कर शांत बैठा रह सकता है। भारत मो. बिन कासिम से लेकर गौरी, गजनी और औरंगजेब जैसों से संघर्ष करते हुए अपने धर्म और संस्कृति के प्रति आस्थावान् बना रहा। अंग्रेजी हुक्मरानों ने भी इस संस्कृति को धूमिल करने अथवा मिटाने के भरसक प्रयास किए, किन्तु सहिष्णुभाव रखने वाले सनातन धर्म की अक्षुण्णता फिर भी बनी रही। अंग्रेज चले गये किन्तु धर्म के आधार पर भारत का विभाजन किए जाने पर भी असहिष्णु इस्लामी आक्रान्ता तहजीब और भारत की सनातन सभ्यता के मध्य आज भी जंग जारी है। दुर्भाग्य यह है कि तथाकथित धर्मनिरपेक्षता उस असहिष्णु आतंकवादी तहजीब को उपयुक्त समर्थन व पोषण का वातावरण प्रदान कर रही है। यह इसलिए क्योंकि आज राजनीति का अर्थ जनसेवा नहीं अपितु केवल सत्ता प्राप्ति रह गया है। अत:एव अल्पसंख्यकों के तुष्टिकरण की नीति बहुत से राजनीतिक दलों को सत्ता के निकट पहुंचने का सहज मार्ग दिखाई देती है। वर्तमान में सत्ताधारी दल जिस प्रकार अपने धर्म और संस्कृति के प्रति आस्थावान् होकर उसके संरक्षण और संवर्द्धन में प्रयासरत है, यह कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों को रास नहीं आ रहा। यही कारण है कि कांग्रेस, वामपंथी तथा अन्य विपक्षी दल तथा उनके नेता जिनमें अधिकांश बहुसंख्यक समाज से ही सम्बद्ध है, अपनी सनातनता को विस्मृत कर अपने ही धर्म के धुर विरोधी बन चुके हैं। उन द्वारा देश में कटुता, साम्प्रदायिकता और विषमता का विषैला वातावरण तैयार किया जा रहा है। संसद में विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा सीधे तौर पर हिन्दू को हिंसा और नफरत से जोडऩे का बयान इस बात को दर्शाता है कि समाज में हिन्दुओं तथा सनातन धर्म के प्रति किस प्रकार जहर घोला जा रहा है। सभी वर्गों, सम्प्रदायों, अल्पसंख्यकों तथा बहुसंख्यकों में फूट डालकर क्या अपने राष्ट्र की अखंडता, एकता और परस्पर सौहार्दता को अक्षुण्ण बनाये रखना संभव है? यह हर भारतीय को सोचना होगा।

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार में वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने 23 जुलाई 2024 को तीसरे कार्यकाल का पहला बजट संसद में पेश किया।

केंद्र सरकार ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए 9 प्राथमिकताएं तय की है। कृषि क्षेत्र में उत्पादकता को बढ़ाना, युवाओं के लिए रोजगार के अधिकतम अवसर निर्मित करना एवं उनके कौशल को विकसित करना, गरीब नागरिकों को भी विकास में हिस्सेदारी देना एवं उन्हें सामाजिक न्याय देना, विनिर्माण इकाईयों को बढ़ावा देना, शहरी क्षेत्रों को विकसित करना, ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करना, आधारभूत ढांचा विकसित करना, नवाचार, शोध एवं विकास करना तथा नई पीढ़ी के सुधार कार्यक्रमों को लागू करना।

शिक्षा-रोजगार-कौशल विकास: भारत के युवाओं एवं महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने एवं कौशल विकसित करने की दृष्टि से 2 लाख करोड़ रुपए की 5 योजनाओं के एक पैकेज की घोषणा की है। शिक्षा, रोजगार एवं कौशल विकास के लिए 1.48 लाख करोड़ रुपए की राशि इस बजट में आबंटित भी कर दी गई है।

प्रधानमंत्री पैकेज के अंतर्गत इ.पी.एफ.ओ के प्रथम बार सदस्य बनने पर औपचारिक क्षेत्र के कर्मचारियों के इ.पी.एफ. खातों में एक माह का वेतन जमा किया जाएगा। इससे 2.1 करोड़ युवाओं को लाभ होने की सम्भावना बजट में व्यक्त की गई है। युवाओं को प्रति माह 6,000 रुपए तक का वाजीफा सम्बंधित कम्पनियों द्वारा अदा किया जाएगा। भारत की सबसे बड़ी 500 कम्पनियों को इस योजना के अंतर्गत युवाओं को इंटर्नशिप की सुविधा देनी होगी। साथ ही, केंद्र सरकार द्वारा भी इन युवाओं को प्रतिमाह 5000 रुपए अदा किए जाएंगे। नए कर्मचारियों के इ.पी.एफ. खाते में जमा होने वाली राशि को आगामी 4 वर्षों तक केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। नए कर्मचारियों के इ.पी.एफ. खातों में जमा की जाने वाली राशि की प्रतिपूर्ति आगामी 2 वर्षों तक केंद्र सरकार द्वारा की जाएगी। इससे रोजगार के 50 लाख नए अवसर निर्मित होने की सम्भावना है।

उद्योग : सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुद्रा लोन योजना के अंतर्गत प्रदान की जाने वाली ऋण राशि की सीमा को 10 लाख रुपए से बढ़ाकर 20 लाख रुपए कर दिया गया है। ऋण की सीमा को बढ़ाकर 100 करोड़ रुपए तक कर दिया गया है।

आवास : प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत एक करोड़ आवासों का निर्माण हेतु 10 लाख करोड़ रुपए की राशि का निवेश होगा, इसमें केंद्र सरकार की भागीदारी 2.2 लाख करोड़ रुपए की रहेगी।

मध्यम वर्ग : वेतनभोगी/पेंशनधारी कर्मचारियों के लिए सामान्य छूट की सीमा को 50,000 रुपए से बढ़ाकर 75,000 रुपए कर दिया गया है। 7.75 लाख तक आय पर शून्य कर का प्रावधान होगा।

कृषि और ग्रामीण विकास :

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत 11.8करोड़ किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई है। इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार के माध्यम से 1361 मंडियों का एकीकरण किया गया है। इससे किसानों को 3 लाख करोड़ रुपये का व्यापारिक लाभ हुआ है। ग्रामीण विकास के लिए 2.7 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया गया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का विकास होगा।

महिला सशक्तिकरण :

महिला सशक्तिकरण के लिए 'लखपति दीदी' योजना का लक्ष्य 2 करोड़ से बढ़ाकर 3 करोड़ किया गया है। इसके तहत महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण के लिए वित्तीय सहायता दी जाएगी। इसके अलावा, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 70 फीसदी घर महिलाओं के नाम पर आवंटित किए गए हैं।

हिमाचल की आपदा से निपटने के लिए मदद करेगी मोदी सरकार

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट पेश करने के दौरान कहा कि हिमाचल में क्षतिग्रस्त घरों का पुनर्निर्माण किया जाएगा। इसके साथ ही प्रभावितों को पुनर्वास किया जाएगा। इसके लिए समुचित धनराशि का प्रावधान किया जाएगा। हिमाचल में पिछले साल बारिश ने जमकर तबाही मचाई थी। पिछले साल मॉनसून सीजन में 500 से ज्यादा लोगों की जान चली गई थी। वहीं 21143 मवेशियों की भी जान गई थी। इस आपदा में हिमाचल में भारी बारिश से 12 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का नुकसान हुआ था।

बजट में क्या सस्ता क्या महंगा

सस्ता : मोबाइल फोन, कंप्यूटर बोर्ड, सोलर पैनल, कैंसर की दवाइयाँ (जैसे ट्रास्टुजुमैब डेरुक्सटेकैन), और मछली पालन संबंधित उत्पाद।

महंगा : सोना, चांदी, प्लैटिनम, पीवीसी फ्लेक्स बैनर, टेलीकॉम उपकरण के पीसीबीए और अमोनियम नाइट्रेट। ◆◆◆

बिटिया प्यारी

एक महिला को बेटे होने के लालच में लगातार पांच बेटियां ही पैदा होती रहीं। जब छठवीं बार वह गर्भवती हुई तो पति ने उसको धमकी दी कि अगर इस बार भी बेटी हुई तो उस बेटी को बाहर किसी सडक़ या चौक पर फेंक आऊंगा। महिला अकेले में रोती हुई भगवान से प्रार्थना करने लगी, क्योंकि यह उसके वश की बात नहीं थी कि अपनी इच्छानुसार बेटा पैदा कर देती। इस बार भी बेटी ही पैदा हुई। पति ने नवजात बेटी को उठाया और रात के अंधेरे में शहर के बीचों-बीच चौक पर रख आया। मां पूरी रात उस नन्हीं सी जान के लिए रो रोकर प्रार्थना करती रही। दूसरे दिन सुबह पिता जब चौक पर बेटी को देखने पहुंचा तो देखा कि बच्ची वहीं पड़ी है। उसे जीवित रखने के लिए बाप बेटी को वापस घर लाया लेकिन दूसरी रात फिर बेटी को उसी चौक पर रख आया। रोज़ यही होता रहा। हर बार पिता उस नवजात बेटी को बाहर रख आता और जब कोई उसे लेकर नहीं जाता तो मजबूरन वापस उठा लाता। यहां तक कि उसका पिता एक दिन थक गया और भगवान की इच्छा समझकर शांत हो गया। फिर एक वर्ष बाद मां जब फिर से गर्भवती हुई तो इस बार उनको बेटा हुआ। लेकिन कुछ ही दिन बाद ही छह बेटियों में से पांच बेटियों की दुर्घटना में मौत हो गई। अब सिर्फ एक ही बेटी जिंदा बची थी और वह वही बेटी थी, जिससे बाप जान छुड़ाना चाह रहा था। एक दिन अचानक मां भी इस दुनियां से चली गई। इधर बेटा और बेटी दोनों धीरे-धीरे बड़े हो गए। पिताजी बेटे पर खूब प्यार लौटाते और बेटी की परवाह नहीं करते, बेटे को अच्छे स्कूल में पढ़ाया-लिखाया, अच्छी ट्रेनिंग करवाई और बेटे की अच्छी नौकरी लगने पर पढ़ी-लिखी बहू घर ले आए।

बेटी पिता के अपने साथ किए जाने वाले व्यवहार को सहन करती रही और जैसे कैसे कष्ट सहन कर पढ़ाई पूरी कर ली और एक स्कूल में पढ़ाने की नौकरी भी मिल गई वह अभी अपने भविष्य के बारे में सोचने लगी तो उसके भाई की पत्नी के कहने से भाई ने शहर में अपनी ट्रांसफर करवा ली। बेटे का एक बच्चा भी हो गया। उसकी अच्छी परवरिश करने और पढ़ाई करवाने के लिए बहू और बेटे ने अलग रहने का निर्णय किया वह अपने पिता को छोडक़र अलग रहने लगे। कभी-कभार मिलने आ जाया करते और अधिकतर धीरे-धीरे आना-जाना भी कम हो गया अब फोन पर ही कभी कभार हाल-चाल पूछ लेते और बच्चे की पढ़ाई तथा नौकरी में व्यस्तता के बहाने पिता से मिलने भी नहीं आ पाए। पिता बिल्कुल अकेले रहते हुए परेशान होने लगे तो बेटी ने अपने भविष्य की चिंता को छोड़ पिता की सेवा करने को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया बिटिया ने मन पक्का कर लिया कि जब तक पिताजी रहेंगे इनके सहारे जी लूंगी। उसके बाद भी जैसे समय रहेगा कट जाएगी। मेरे पास अपने गुजारे लायक नौकरी तो है ही, गुजर बसर हो ही जाएगी। शायद यही ईश्वर की इच्छा है कि वह मुझसे पिता की सेवा करवाना चाहते हैं। इस हालत में बेटी ने पिता को अकेले छोडक़र अपनी शादी का विचार छोड़ दिया और रात दिन पिता की सेवा में जुट गई।

पिता को भी बेटी को दी गई प्रताडऩा के बारे में सोचकर कष्ट होता वह रोने भी लगते। अपने दिल की बात बेटी के साथ साझा करते। अब पिता को इस बात का एहसास था कि वह बेटी जो जिंदा बची रही, उसने अपने बूढ़े पिता की सेवा करने के लिए शादी नहीं की। अपना सुख छोडक़र अपनी नौकरी से पिता की देखभाल कर रही है। उसके पिता अब इतने बूढे हो चुके थे कि वह खुद ना खाना बना सकते थे ना अपने हाथों से खा सकते थे। बस एक बेटी ही उनका सहारा थी जो उनका खाना बनाती अपने हाथों से खिलाती, नहलाती धुलाती, सेवा करती और पिता की सेवा में ही अपने जीवन की खुशियां तलाशती। जिस बेटे के लिए पिताजी परेशान थे, वह बेटा अपनी पत्नी और बच्चे के साथ अलग रहता है। बस कभी-कभी आकर पिता का हालचाल पूछ लेता है। पिताजी अब हर दिन शर्मिंदगी के साथ रो-रो कर कहा करते, मेरी प्यारी बेटी जो कुछ मैंने बचपन में तेरे साथ किया उसके लिए मुझे क्षमा कर देना। ◆◆◆

संघ के एक स्वयंसेवक का सेवाभाव

काम ऐसा हो कि विरोधी भी प्रशंसक बन जाएं

हरिराम धीमान

1988 की बात है जब मेरी तैनाती सिरमौर जिला के नाहन केंद्र में थी। मैं खंड कार्यवाह था और डॉ. महेंद्र शर्मा, पूर्व विभाग संघ चालक, नाहन जिला चिकित्सालय में तैनात थे और जिला कार्यवाह का दायित्व निभा रहे थे। वे नियमित रूप से शाखा में आते और शाखा के बाद कार्यकर्ताओं और मरीजों से मिलते। वे गली से गुजरते समय भी दवाई लिखने के लिए रुक जाते थे।

तब हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह थे, जो संघ के प्रति सख्त थे। एक दिन डॉ. शर्मा का तबादला दुर्गम क्षेत्र डोडरा क्वार के लिए हो गया। यद्यपि वे पहले ही चार साल किन्नौर जिले के पूह में सेवाएं दे चुके थे, उन्होंने कोर्ट से स्टे लेने से मना कर दिया। नाहन के कांग्रेस विधायक कुंवर अजय बहादुर को जब यह खबर मिली, तो वे मुख्यमंत्री से मिले और डॉ. शर्मा के स्थानांतरण आदेश रद्द करने का आग्रह किया। वीरभद्र सिंह ने पूछा कि वे संघ के कट्टर कार्यकर्ता हैं, आप उनकी सिफारिश क्यों कर रहे हैं? अजय बहादुर ने जवाब दिया कि उनकी विचारधारा से कोई लेना-देना नहीं है, वे एकमात्र डॉक्टर हैं जो समय पर आते हैं और मरीजों को पूरा समय देते हैं। इस पर वीरभद्र सिंह ने प्रभावित होकर उनके स्थानांतरण आदेश रद्द कर दिए। संघ के स्वयंसेवक अपनी कार्यशैली, सेवाभाव और समर्पण से सभी का दिल जीत लेते हैं। ◆◆◆

हिंदुत्व पर प्रहार राष्ट्र की आत्मा पर वार

डॉ. राजेश शर्मा

- हिंदुत्व विरोधी मानसिकता के स्वर बने चुनौती
- अल्पसंख्यकों का अंधा तुष्टीकरण
- इंडी एलायंस द्वारा हिंदुत्व विरोधी एजेंडे का समर्थन
- विदेशों में सनातन के प्रति बढ़ता आकर्षण
- हिंदुत्व में समाहित विश्व बंधुत्व की भावना

पहले कहा, ''जो लोग मंदिर जाते हैं, वे ही लड़कियों, महिलाओं को छेड़ते हैं''। और... अब कहा- ''जो अपने आप को हिंदू कहते हैं वे 24 घंटे हिंसा, नफरत की बात करते हैं''।

इससे पहले विगत 70 वर्षों में भी हिंदू आतंकवाद, भगवा आतंकवाद और हिंदू सांप्रदायिकता के नारे दिए जाते रहे हैं। पहले हिंदू और मुसलमान के मजहब के आधार पर देश का विभाजन और फिर अल्पसंख्यकों के बहाने मुसलमानों का तुष्टिकरण, हिंदुत्व की विचारधारा को कहना, कभी हिंदू और सनातन को गंदा शब्द कहकर प्रचार करना, कभी हिंदू हिंदुत्व, हिंदू आस्था, परंपरा, संस्कृति पर हमला बोलना, देश के भीतर और देश के बाहर भी भारतीय अस्मिता की आलोचना करना, आक्रमणकारियों, विधर्मियों को महान बताना और देश के महान एवं आदर्श नायकों का अपमान करना, यह सब कुछ नया नहीं इस सबके मूल में एक विदेशी रीतिनीति काम कर रही है, जो स्वतंत्रता के बाद भी भारत को मानसिक तौर पर गुलाम बनाए रखना चाहती है।

आज विपक्ष अंग्रेजों की नीति 'फूट डालो राज करो' के आधार पर शासन करना चाहता है। एक वर्ग की खुशामद और दूसरे का अपमान यह दोहरा मापदंड इस देश के सामने कई चुनौतियां पैदा कर रहा है। इसी कुंठित मानसिकता के मार्ग में अब वर्तमान में राजनीतिक और सामाजिक एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के आधार पर जो राजनीतिक दल और अन्य संस्थान सामने खड़े हुए दिखाई पड़ रहे हैं, उनको निशाना बनाया जाना, स्वभाविक है। क्योंकि इन राष्ट्रवादी ताकतों के रहते राष्ट्र में भ्रष्टाचार के बलबूते राष्ट्रीय संपदा को लूटना और विदेशी ताकतों को मजबूत करना, इन इरादों को अब चुनौतियां मिलने लगी हैं। इसलिए जो उनके रास्ते में आएगा उसकी आलोचना करना इस विपक्षी मानसिकता का मुख्य कार्य है, जो वर्तमान में अनेक सैद्धांतिक और राजनीतिक मतभेद होते हुए भी इंडी एलाइंस के रूप में सत्ता के लिए संघर्ष कर रहा है। सत्ता से दूर रहना उनके स्वभाव में नहीं है। इसलिए किसी भी कीमत पर सत्ता को प्राप्त करना एक मुख्य लक्ष्य है, उसके लिए भले ही देश विरोधी ताकतों से भी सहायता क्यों न लेनी पड़े, उसमें भी इन्हें कोई गुरेज नहीं है।

पिछले वर्षों में गोधरा कांड और चुनाव के बाद हिंसा के बहाने हिंदुओं का सामूहिक संहार हुआ। भारत विभाजन के दौरान लाखों हिंदुओं का कत्लेआम हुआ। आतंकवादी घटनाओं में हिंदुओं को चिन्हित करके गोली का निशाना बनाया गया। कश्मीर में हिंदुओं को रातों-रात पलायन के लिए मजबूर किया गया। महिलाओं और बच्चियों का बलात्कार हुआ। अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के लोगों का धर्मांतरण किया गया। साधुओं की सामूहिक हत्या की गई। गोवंश की सुरक्षा करने वालों पर लाठियां बरसाई गईं। धर्म परायण कार सेवकों पर गोलियां चलाई गईं। पालघर में साधुओं की हत्या कर दी गई। हनुमान चालीसा पढ़ने वालों को जेल में डाला गया। आलोचना करने वाले पत्रकारों पर रासुका लगा कर जेल में बंद किया गया। इमरजेंसी के दौरान पत्रकारिता पर सेंसरशिप लगाई गई। जबरन नसबंदी की गई। विरोधी स्वरों को दबाया गया और जेल में कठोर यातनाएं दी गईं। सनातन धर्म की आलोचना की गई। अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के लिए सरकारी खजाना लुटाया गया। मंदिरों को तोड़ा गया और मस्जिदें बनाई गईं। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड बनाकर अल्पसंख्यकों के हित साधे गए। अल्पसंख्यकों को अन्य समुदायों के स्थान पर आरक्षण दिया गया। हिंदुओं की संपत्ति का बंटवारा करने की योजना बनाई गई। सिनेमा के माध्यम से हिंदू देवी-देवताओं की आलोचना की गई। राम को काल्पनिक बताया गया। इन घटनाओं के पीछे सत्ता पर कब्जा बनाए रखने और हिंदू धर्म और संस्कृति को नष्ट करने की मानसिकता रही है। हाल ही में लोकसभा के चुनाव में 99 सीटों पर सिमट कर एनडीए की सरकार का विरोध करने के मंसूबों को अंजाम देते हुए लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी ने हिंदू देवी देवताओं, सिख गुरुओं के चित्र हाथ में लेकर संसद में लहराते हुए कहा- 'अपने आप को हिंदू कहने वाले

- **विपक्ष की हिंदू समाज की कमियों को उभारना और अन्यों पर पर्दा डालने की कुंठित सोच बेनकाब**
- **राष्ट्र के चहुंमुखी विकास के लिए एक राष्ट्र एक जन, एक संस्कृति का सिद्धांत आवश्यक है**

लोग 24 घंटे हिंसा हिंसा, नफरत नफरत की बात करते हैं।' इसके बाद लोकसभा में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और सत्ता पक्ष के अन्य नेताओं ने हिंदू विरोधी इस बयान की जमकर आलोचना करते हुए हिंदू संस्कृति, धर्म, दर्शन और परंपराओं के ऐतिहासिक महत्व का पक्ष सामने रखा कि हिंदू विश्व भ्रातृत्व और 'सर्वे भवंतु सुखिन:' की विचारधारा को अपना कर एक व्यवस्थित जीवन पद्धति का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए हिंदू कभी हिंसक और नफरत फैलाने वाला नहीं हो सकता है।

इसी दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी हिंदू ,हिंदुत्व और हिंदू संस्कृति की उदात्त एवं सर्वहितकारी परंपराओं के पक्ष को मजबूती से सामने रखा। वस्तुत: लोकसभा में तीसरी बार नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने और राजग की तीसरी बार सरकार का गठन किए जाने पर विपक्ष तिलमिलाया हुआ है और वह किसी भी आधार पर सत्ता प्राप्त करना चाहता है, भले ही उसके लिए राष्ट्रीय गौरव की भी आलोचना क्यों न करनी पड़े। विपक्ष ने जातीय जनगणना के आधार पर हिंदुओं को विभिन्न जातियों में बांटने का काम किया है जबकि मुसलमानों में अनेक फिरके होने के बाद भी उनको एक ही जाति में मानकर अल्पसंख्यक का दर्जा दिया गया है। क्या यह बहुसंख्यक हिंदुओं के साथ अन्याय नहीं है।

यद्यपि राजनीतिक तौर पर हिंदू विभिन्न जातियों में बंटे हुए हैं। उसके बावजूद भी हिंदुओं में अपने प्रति हो रहे भेदभाव के विरुद्ध अब कुछ स्वर मुखर होने लगे हैं। भारत के भीतर भी और विदेशों में भी हिंदू संस्कृति की प्रशंसा होने के साथ-साथ हिंदू धर्म एवं संस्कृति के प्रति विदेशियों का आकर्षण बढ़ा है और सनातन की शिक्षाओं, परंपराओं, जनजीवन, परिवार एवं समाज व्यवस्था को अपनाने के लिए पहल होने लगी है । हिंदू संस्कृति को सार्वभौमिक एवं सर्वमान्य विराट् स्वरूप देने के लिए प्राचीन काल से अब तक निरंतर भारतीय ज्ञान परंपरा प्रवाहित होती रही है। इसी मार्ग को अपनाते हुए अनेक महापुरुषों, संत, महात्माओं, गुरुओं ने समाज सुधार और संस्कृति के संरक्षण का महान कार्य करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया है। इसी परंपरा में आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अग्रणी भूमिका का निर्वाह करने के लिए प्रतिबद्ध है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से 'एक राष्ट्र, एक जन, एक संस्कृति' के सिद्धांत पर अग्रसर होकर विभिन्न सेवा प्रकल्प संचालित कर रहा है। इसी चिंतनधारा के अनुपालन में वर्तमान सरकार द्वारा कुछ निर्णय राष्ट्रहित में लिए जाने का प्रयास हो रहा है, जिसके लिए विरोधी मानसिकता द्वारा लगातार चुनौतियां मिल रही हैं। अत: संगठित, संयमित और समर्पित भाव से भारत की संस्कृति को विश्व गुरु होने के मार्ग पर अग्रसर करने के लिए निरंतर सेवा कार्य करने को प्राथमिकता देने का प्रयास किया जाना चाहिए।◆◆◆

सब में ईश्वर देखता है हिन्दू

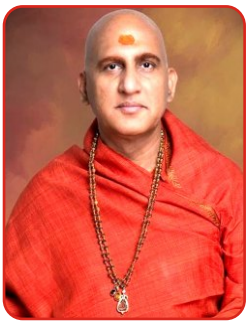

स्वामी अवधेशानंद गिरि
आचार्य महामंडलेश्वर
जूनापीठाधीश्वर

हिन्दू संपूर्ण जड़ जगत से प्रेम करता है। सबमें ईश्वर को देखता है। हिन्दू अहिंसक है, समन्वयवादी है और सहिष्णु है। हिन्दू यही तो कहता है कि पूरा विश्व मेरा परिवार है। निरंतर सबके कल्याण और सुख सम्मान की कामना करना हिन्दू अपना धर्म मानता है। और हिन्दुओं को हिंसक कहना अथवा ये कहना कि वे घृणा फैलाते हैं, ये ठीक नहीं है। इस प्रकार की बातें कहकर विपक्षी नेता पूरे समाज को लांछित व अपमानित कर रहे हैं। हिन्दू समाज अत्यंत उदार है और वह ऐसा समाज है जो सर्व समावेशी है, सभी जातियों, मत-पंथ-संप्रदायों का सम्मान करता है और सभी प्राणियों के प्रति आदर और सद्भाव का भाव रखता है । इसलिए हिन्दू तो वह है, जो सबमें ईश्वर को देखता है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी जी का बारम्बार हिन्दुओं को हिंसक, नफरत पैदा करने वाले, चौबीस घंटे हिंसा करने वाले, मिथ्या भाषण करने वाले इत्यादि कहना सर्वथा अनुचित है व इसकी सर्वत्र भर्त्सना होनी चाहिए । **वे सदन के सम्माननीय सदस्य हैं और विपक्ष के नेता है। इसलिए इन शब्दों को वापस लेना चाहिए। पूरा समाज आहत है। संत समाज में रोष है। उन्होंने हिन्दुओं की मान्यता पर प्रहार किया है जो कि अत्यंत कोमल करूणामयी वेदना हुई है। उन्होंने ऐसा कहकर संत समाज को कलंकित किया है। उन्हें इसके लिए क्षमा मांगनी चाहिए।◆◆◆**

सनातन एवं हिंदुत्व का विरोध और चुनौतियां

डॉ. कर्म सिंह

आजकल राजनैतिक और वैचारिक आधार पर सनातन एवं हिंदुत्व का विरोध किया जाना सामान्य बात हो गई है। वर्तमान समय में जो जितना अधिक हिन्दुत्व का विरोध करता है वह अपने राजनीतिक दल में उतना ही बड़ा नेता मान लिया जाता है। यदि बयान लीक से हटकर विरोधाभासपूर्ण हो जाए, किरकिरी होने लग जाए, और उस पर बवाल मच जाए तथा फजीहत हो जाए, तो पार्टी उससे किनारा कर लेती है और वह बयान उस व्यक्ति का व्यक्तिगत विचार बता दिया जाता है। परंतु सनातन एवं हिंदुत्व का विरोध किसी न किसी बहाने जारी रहता है। श्रीराम और श्रीकृष्ण सनातन धर्म संस्कृति के सर्वोच्च आदर्श माने जाते हैं। समस्त हिंदू श्रीराम और श्रीकृष्ण को भगवान मानकर श्रद्धा एवं आस्था से पूजते हैं। श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण पांच सौ साल बाद अनेकों बलिदान देकर हो सका और मथुरा में भी श्रीकृष्ण की जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण का प्रयास चल रहा है। अनेक मंदिरों के खंडहर और उन पर बनाए गए ढांचे विधर्मियों के आतंकी इतिहास की गवाही दे रहे हैं। भारत में आक्रमणकारी विधर्मियों द्वारा तोड़े गए असंख्य मंदिर उन पर बने ढांचों को हटाए जाने के लिए हिन्दुजन सैकड़ों वर्षों से संघर्षरत हैं।

वर्तमान में सनातन धर्म और हिंदुत्व का विरोध राजनीतिक और वैचारिक रूप से बढ़ता जा रहा है, जहां विरोध करने वाले नेताओं को अधिक महत्व दिया जाता है। इस विरोध में श्रीराम और श्रीकृष्ण की मान्यताओं का उल्लंघन, मुस्लिम जनसंख्या का बढ़ना, आर्थिक षड्यंत्र और जातिवाद के आधार पर विभाजन शामिल हैं। विदेशी ताकतों और घरेलू राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा हिंदू समाज को कमजोर करने के प्रयासों का समाधान आवश्यक है।

अब तक की पंथनिरपेक्ष सरकारें ''मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना'' इस जाल में हिंदू जनमानस को उलझाए हुए हैं। इस घुट्टी का असर आज भी बरकरार है। एक ओर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की सार्वभौमिक उदात्त भावना के माध्यम से सब के सुख की कामना और दूसरी तरफ तलवार की धार पर और बंदूक की नोक पर मत मजहबों का प्रचार तथा सनातन का विरोध। एक ओर देश के लिए माता के रूप में मातृभूमि का सम्मान और दूसरी ओर देश की संपत्ति पर पहला हक जताने के बाबजूद देश को अपना नहीं मानने वाली मानसिकता से लबरेज समुदाय। यह दोहरी एवं कुंठित मानसिकता राष्ट्र तथा सनातन धर्म, संस्कृति के लिए चुनौतीपूर्ण माहौल पैदा कर रही है। यद्यपि बहुसंख्यक हिंदू सामाजिक विसंगतियों के कारण खान-पान, ऊंच-नीच के जाल में फंसा हुआ है और राजनैतिक दल इस कमजोरी का फायदा उठाकर हिंदुओं के साथ छलावा करते आए हैं।

विडंबना यह है कि फूट डालो और राज करो इस नीति का शिकार हुआ हिंदू ही हिंदुओं का विरोध करने को तैयार हो जाता है। जातिवाद को देश के अंदर व विदेशों में सक्रिय विघटनकारी शक्तियों का समर्थन एवं संरक्षण है। यदि हिन्दू समाज के जागरण का कोई आंदोलन आवाज उठाने लगता है, तो उसका भीतर और बाहर से घोर विरोध होता है। हिंदुत्व का विरोध करने के लिए अनेक राजनैतिक दल, वामपंथी तथा मुस्लिमपरस्त ताकतें एकजुट हो जाती हैं। संसद के भीतर और सड़कों पर खूब हंगामा होने लगता है। वर्तमान में देश के भीतर यही दृश्य देखने को मिल रहा है।

आर्यों को विदेशी बताकर भारत के मूलनिवासी लोगो में हीनभावना भरना भी इसी षड्यंत्र के अंतर्गत एक सोची समझी चाल है। आर्य और द्रविड़ का विवाद खड़ा करके इस मुद्दे को तूल देने का प्रयास किया गया है जिस से उत्तर दक्षिण में एकजुटता न हो सके। अब विभिन्न ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि आर्य भारत के मूलनिवासी हैं जिन्हें आक्रमणकारियों तथा इतिहासकारों ने हिंदू नाम दिया है।

समस्त वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, वैदिक एवं पौराणिक साहित्य हिंदू धर्म एवं संस्कृति के आधारभूत ग्रंथ सबसे प्राचीन है। विभिन्न मत मतांतरों की आयु दो हजार साल से अधिक नहीं है, जबकि सनातन का इतिहास सृष्टि की संरचना एवं इतिहास के साथ-साथ चलता है जो वैज्ञानिक और व्यावहारिक है।

जनसंख्या विस्फोट : भारत में मुस्लिम पर्सनल लॉ की आड में तेजी से बढ़ रही मुसलमानों की आबादी एक खतरा बनता जा रहा है इनमें से कुछ कट्टरपंथियों की निष्ठा केवल मजहब के लिए है देश के लिए नहीं। वे जनसंख्या बढ़ाकर सत्ता हथियाने की सोच से चल रहे हैं। अब तक कुछ जिलों और प्रदेशों में मुस्लिम आबादी का प्रतिशत

बढ़ गया है ओर हिंदू अल्पमत में आ गया है। ऐसे इलाकों में पाकिस्तान जिंदाबाद होने लगा है और सनातन संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट किए जाने के षड्यंत्र रचे जा रहे हैं।

जातिवाद : सनातन में गुण कर्म स्वभाव के आधार पर वर्ण-व्यवस्था रही है, जन्म के आधार पर जातिवाद नहीं। आजादी के बाद समाज के कमजोर वर्गों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए कुछ कारगर कदम उठाए गए, जो बाद में राजनैतिक स्वार्थवश वोट बैंक में बदल गए। अब जातीय जनगणना और मजहबी आधार पर आरक्षण दिए जाने की बात होने लगी है। इस कवायद में हिंदुओं में फूट बनी रहे, वे संगठित न हो सकें इसलिए जाति के आधार पर जनगणना की जाती है जबकि मुसलमानों की जनगणना उनके फिरकों के आधार पर नहीं की जाती है। उनको एक ही समुदाय में गिना जाता है। दूसरी ओर हिंदुओं के दो बच्चे और मजहब के आधार पर मुस्लिमों को ज्यादा बच्चों की छूट पर जनसंख्या नियंत्रण की दृष्टि से विचार किये जाने की आवश्यकता है जिस से जनसंख्या पर नियंत्रण किया जा सके।

लव जिहाद, भूमि जिहाद, थूक जिहाद इन हथकंडों के माध्यम से सनातन को कमजोर किए जाने के बराबर प्रयास हो रहे हैं। वक्फ बोर्ड को कानून बनाकर दिए गए असीमित अधिकारों की आड़ में सरकारी और निजी संपत्तियों पर वक्फ बोर्ड का कब्जा हो रहा है।साधू संतों के वेश में हिंदुओं को ठगना और मंदिरों में पुजारी बनकर सनातन की बुराई करना हिंदुओं के धार्मिक ग्रंथों में मिलावट करना आदि सनातन को बदनाम करने की साज़िश के समाचार सामने आने लगे हैं। मज़हब के आधार पर आर्थिक नाकेबंदी की खबरे असहज करने वाली हैं।

सनातन का विरोध करते हुए डेंगू मलेरिया कहा गया। कभी रामचरितमानस जैसे कालजयी पवित्र ग्रंथ को जलाने की बात की गई, जिसे अब विश्व धरोहर घोषित किए जाने से भारतीय ज्ञान परंपरा का गौरव बढ़ा है। विश्व ने एकमत से स्वीकार किया है कि रामचरितमानस भक्ति और मानवता का अद्भुत खजाना है।

यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि मजहब के नाम पर देश का विभाजन किए जाने के बाद भी एक वर्ग देश में अस्थिरता पैदा करने का प्रयास कर रहा है तथा विगत वर्षों में सामुदायिक तुष्टिकरण के लिए अनेक योजनाएं बनाईं गई हैं। सबका समान विकास होना चाहिए परंतु सनातन के विरोध की कीमत पर नहीं।

अब आर्थिक नाकेबंदी के लिए रिलायंस, अडाणी, अंबानी, पतंजलि का विरोध करके भारतीय आर्थिक व्यवस्था को कमजोर करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है और विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पक्ष में माहौल बनाया जा रहा है जो कि भारतीयता का सीधा विरोध है तथा विश्व में सबसे तेजी से उभरती भारतीय अर्थव्यवस्था को रोकने का प्रयास है। भारत के लिए यह गौरव की बात रही है कि आज अडानी, अंबानी, टाटा, महिन्द्रा, बिड़ला, आदि कंपनियां भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में कामयाब हो रही हैं। भारत में निवेश बढ़ रहा है। विश्व समुदाय भारत की सनातन संस्कृति एवं परंपराओं की ओर आकर्षित हो रहा है। ऐसे में मल्टीनैशनल कंपनियों का विरोध न करके भारतीय कंपनियों का विरोध करना एक सोची समझी रणनीति का हिस्सा है ताकि देश की वित्तीय स्थिति को कमजोर किया जा सके। सबका साथ सबका विकास का नारा बुलंद किए जाने के बाद भी राष्ट्रवाद और सनातन का विरोध जारी है। राजनीतिक दलों को केवल अपने वोट बैंक की अधिक चिंता है और देश के विकास की कम।

राजनैतिक विरोधाभास के चलते एनडीए की सरकार की साख गिराने के षड्यंत्र किए जा रहे हैं। चुनावों में सुधारवादी कार्यक्रमों का विरोध और विदेशी ताकतों का साथ इसका सबूत है।

संविधान को खतरे में बताकर जनता को बरगलाने का प्रयास एक कोरा झूठ है। जबकि संविधान की दुहाई देने वाले स्वयं संविधान की भावना से खिलवाड़ करते रहे हैं। इमरजेंसी, शाहबानों केस और विभिन्न प्रदेशों की चुनी हुई सरकारों को अनेक बार बर्खास्त करने के उदाहरण इस बात की गवाही देते हैं कि संविधान की मूल भावनाओं की हत्या समय-समय पर पहले भी होती रही है । किसी राजनैतिक दल को संविधान के विरुद्ध कार्य करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

मीडिया पर दुष्प्रचार करके भी सनातन पर हमला किया जा रहा है। फिल्मों में हिंदू पात्रों को विलेन बताना और उनके विरुद्ध अन्य मतों को श्रेष्ठ बताना सनातन विरोधी षड्यंत्रकारी सोच को उजागर करता है।

पाकिस्तानपरस्ती और चीन की तरफदारी वैचारिक और राजनैतिज्ञ मंचों पर अक्सर देखने को मिलने लगी है। आतंकवाद के जरिए सीमा पर बारदातों को अंजाम देना तथा सनातनी हिन्दुओं की हत्या करना कतई सही नहीं ठहराया जा सकता। बांग्लादेश के शरणार्थियों और रोहिंग्याओ की घुसपैठ से सीमावर्ती प्रदेशों की डैमोग्राफी बदलने लगी है। अब इनको राजनैतिक संरक्षण मिलने से तथा एकतरफा वोटों से राजनीति पर भी असर होने लगा है। इस प्रकार सनातन एवं हिंदुत्व के विरोध में देश के भीतर और बाहर राष्ट्र विरोधी ताकतें सक्रिय हैं जिनका समय पर इलाज किया जाना

बलिदानी पिता की वीर पुत्रियां
सूर्य और परमाल

सन् 712 ई.। बगदाद के खलीफा बलीद की सेनाओं ने अपने सेनापति मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में देवल पर आक्रमण किया था। उस समय सिंध के शासक थे महाराजा दाहिर। युवराज जयशाह के संचालन में आर्य सेनाएँ युद्ध-क्षेत्र में भेजी गयीं, किंतु 20 जून 72 ई. को राजा दाहिर युद्ध में बलिदान हो गये और देवल की सेनाएँ हार गयीं। उसके बंदरगाह पर चाँद तारे का हरा झंडा लहराने लगा। दाहिर का सिर, दाहिर की दोनों पुत्रियाँ, सूर्य और परमाल और दाहिर का छत्र भेंट रूप में कासिम ने खलीफा बलीद के पास बगदाद भेज दिया और स्वयं वहीं ठहरकर सम्पूर्ण भारत को विजय करने का कार्यक्रम बनाने लगा।

देशभक्ति और वीरता सर्वोपरि हैं। महाराजा दाहिर की पुत्रियाँ सूर्य और परमाल ने अपने पिता और देश के अपमान का बदला लेने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। उन्होंने दिखाया कि सच्चा साहस और आत्मसम्मान किसी भी कीमत पर बनाए रखना चाहिए। उनका बलिदान हमें यह सिखाता है कि स्वाभिमान और सम्मान के लिए किसी भी हद तक जाना चाहिए।

खलीफा के सामने भेंटे लायी गयी- सूर्य और परमाल को देखकर खलीफा की आँखें खुली-की-खुली ही रह गयीं। 'ये दाहिर की बेटियां हैं या हूरें?' उन्हें देखकर खलीफा ने अपने सैनिकों को वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी। अब महल के उस कक्ष में खलीफा था और बेसहारा दोनों कन्याएँ। उसने सूर्य देवी की ओर देखा और शादी करने के लिए कहा। यह सुनकर सूर्यदेवी रो उठी। 'क्यों? रोती क्यों हो?' कहता हुआ खलीफा अपने आसन् से उठकर सूर्यदेवी की ओर बढ़ा तो दोनों ही बहिनें कूदकर एक ओर को हट गयीं।

हमें न छूना, खलीफा! सूर्य देवी ने कहा। हम आपके योग्य नहीं रह गयी हैं, हमें नीच कासिम ने अपवित्र कर दिया है। खलीफा पर मानो वज्रपात हुआ, उसने अपना सिर पकड़ा और अपने आसन पर गिर पड़ा। खलीफा की आंखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं। ओह! नीच कासिम! मेरे साथ धोखा!

खलीफा ने आज्ञा दी, जाओ।, कासिम को जिंदा सूखी खाल में सिलकर मेरे सामने हाजिर करो। आज्ञा का पालन करने के लिये उसके दूत हिन्दुस्तान की ओर दौड़ पड़े। कासिम ने बहुत चाहा कि उसे जिंदा ही खलीफा के सामने ले जाया जाये किन्तु उसकी एक भी न सुनी गयी। सेनापति कासिम को सूखी खाल में सिल दिया गया। खाल के उस बोरे में बंद कासिम की लाश खलीफा के सामने लायी गयी। उसे देखते ही खलीफा का क्रोध और भी भडक़ उठा और उसने उठकर खाल के बोरे पर ही लातें मारी। क्रोध कुछ शान्त हुआ तो उसने हुक्म दिया कि सूर्य और परमाल को वहीं उपस्थित किया जाय। दोनों आर्य बालिकायें फिर खलीफा के सामने लायी गयीं। मैंने कासिम को अपनी तौहीन की माकूल सजा दी है लड़कियों! उसकी लाश मेरी ठोकरें खाकर नीचे दरबार में लौट रही है, खलीफा ने कहा। लेकिन सच-सच बता दो; तुमने जो कुछ कहा था, क्या वह सही था? नहीं, बिल्कुल नहीं; वह तो झूठ था, एक दम झूठ!! सूर्यदेवी ने उत्तर दिया।

खलीफा का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। तो फिर तुमने यह झूठी बात क्यों कही? वह चीखकर बोला। अपने देश के अपमान और अपने पिता की मौत का बदला लेने के लिये। सूर्यदेवी ने हँसते हुए उत्तर दिया। क्रोध के मारे खलीफा के मुँह से एक शब्द भी न निकल सका। क्यों? क्या सोच रहे हो, खलीफा हम आर्य-ललनाएँ हैं; संसार में किसका साहस है कि वह हमारे शरीर का स्पर्श भी कर सके, सूर्यदेवी ने कहा। और इससे पहले ही कि खलीफा उनके लिये कोई दण्ड घोषित करता, दोनों बहिनों ने एक-दूसरे की छाती में अपनी-अपनी विष से बुझी हुईं कटारें भोंक दी और उन दोनों के निर्जीव शरीर महल की छत पर नीचे गिर पड़े।◆◆◆

20563 शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण कर रहे हैं 34 लाख छात्र-छात्राएं

सुन्नी में आयोजित सम्मेलन में सरस्वती विद्या मंदिरों के 190 प्रतिनिधियों ने लिया भाग

हिमाचल शिक्षा समिति का तीन दिवसीय प्रधानाचार्य व प्रबंधक सम्मेलन सरस्वती विद्या मंदिर सुन्नी में सम्पन्न हुआ। इसमें प्रदेश के 11 जिलों से सरस्वती विद्या मंदिरों के 190 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में सरस्वती विद्या मन्दिरों में शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने, आधारभूत एवं केंद्रीय विषयों एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की योजनाओं पर भी विचार किया गया। हिमाचल शिक्षा समिति के प्रांत अध्यक्ष मोहन सिंह केस्टा ने कहा कि आज लक्षद्वीप और मिजोरम को छोडक़र संपूर्ण भारत में 86 प्रांतीय एवं क्षेत्रीय समितियां विद्या भारती से संलग्न हैं। इनके अंतर्गत कुल मिलाकर 20563 शिक्षण संस्थाओं में 1,48,000 शिक्षकों के मार्गदर्शन में 34 लाख छात्र-छात्राएं शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण कर रहे हैं। आज नगरों और ग्रामों में वनवासी और पर्वतीय क्षेत्रों में झुग्गी-झोंपडियों में शिशु वाटिकाएं, शिशु मंदिर, विद्या मंदिर, सरस्वती विद्यालय, उच्चतर शिक्षा संस्थान, शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र और शोध संस्थान हैं। इन सरस्वती मंदिरों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। आज विद्या भारती भारत में सबसे बड़ा गैर सरकारी शिक्षा संगठन बन गया है। विद्या भारती के पूर्व छात्र पोर्टल पर लगभग 10 लाख पूर्व छात्र पंजीकृत हैं। गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करना विद्या भारती का उद्देश्य है। इस सम्मेलन में विद्यालय स्तर पर आने वाली कठिनाइयों एवं चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक करना, नई तकनीक, भारतीय ज्ञान परम्परा, क्रिया आधारित शिक्षण, अनुभव अधिगम सामग्री, कौशल विकास आदि विषयों पर विस्तृत वार्ता हुई। हिमाचल शिक्षा समिति के प्रांत संगठन मंत्री ज्ञान सिंह ने पांच प्रण-सामाजिक समरसता, पर्यावरण, कुटुम्ब प्रबोधन, स्व का बोध तथा नागरिक कर्तव्य एवं अनुशासन विषयों पर मार्गदर्शन किया। उन्होंने इन पंच प्राणों को पूरा करने की कार्ययोजना पर बिंदुवार समीक्षा की। उन्होंने स्पष्ट किया कि समाज में विभेद के विरुद्ध विमर्श खड़ा करना तथा समरसता के लिए निरंतर प्रयास करना हमारा लक्ष्य है। अस्पृश्यता समाज के लिए कलंक है। ◆◆◆

हिम फिल्मोत्सव 2024 के पोस्टर का विमोचन

हिम सिने सोसाइटी हिमाचल प्रदेश द्वारा 19-20 अक्तूबर 2024 को धर्मशाला में द्विवार्षिक फिल्म फेस्टिवल 'हिम फिल्मोत्सव-2024' का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन की घोषणा सोसाइटी की उपाध्यक्ष भारती कुठियाला ने शिमला में आयोजित एक प्रेस वार्ता में की। इस दौरान हिम फिल्मोत्सव 2024 के पोस्टर का विमोचन भी किया गया। इस फिल्मोत्सव में विभिन्न श्रेणियों के विजेताओं को 5 लाख रुपये तक की पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी।

फिल्मोत्सव में तीन श्रेणियों में फिल्में प्रस्तुत की जाएंगी : डॉक्यूमेंट्री फिल्म, शॉर्ट फिल्म, और कैंपस फिल्म्स। डॉक्यूमेंट्री फिल्मों की अवधि 30 से 45 मिनट, शॉर्ट फिल्मों की अवधि 18 से 25 मिनट, और कैंपस फिल्मों की अवधि 5 से 20 मिनट निर्धारित की गई है। इस उत्सव के लिए चयनित विषयों में ऐतिहासिक गौरवशाली हिमाचल, हिमाचल की कला संस्कृति और परम्पराएं, देश सेवा और बलिदान, देवभूमि हिमाचल की देव परम्परा, स्वतंत्रता संग्राम में हिमाचल की भूमिका, प्रदूषणमुक्त हरित हिमाचल, वोकल फॉर लोकल, हिमाचल की सशक्त नारी, खेलों में हिमाचल, और आधुनिक और उन्नत हिमाचल शामिल हैं। फिल्मोत्सव के लिए नियमों के अनुसार, फिल्म या वृत्तचित्र की भाषा हिमाचली या हिंदी में होनी चाहिए और इसे दिए गए विषयों पर आधारित होना चाहिए। फिल्म/वृत्तचित्र जमा करने की अंतिम तिथि 30 सितंबर 2024 है। प्रोफेशनल शॉर्ट/डॉक्यूमेंट्री फिल्म के लिए पंजीकरण शुल्क 750 रुपये और नॉन प्रोफेशनल शॉर्ट फिल्म के लिए 500 रुपये निर्धारित किए गए हैं। आवेदनकर्ता J&K Bank A/c No. 0120040100005561 IFSC: JAKAOSHIMLA में फीस जमा कर सकते हैं। फिल्म गूगल ड्राइव लिंक के साथ hcshimachal@gmail.com पर मेल करें। अधिक जानकारी के लिए भारती कुठियाला (98822-06124), संजय सूद (94180-65293), कपिल शर्मा (98058-18646), और अंकुर कौंडल (98175-59023) से संपर्क कर सकते हैं। ◆◆◆

शताब्दी वर्ष में पांच प्रमुख बिंदुओं पर काम करेगा संघ : हरीश

समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण, नागरिक कर्तव्य और स्वदेशी पर रहेगा फोकस

- हमीरपुर जिला के टिप्पर में संघ शिक्षा वर्ग का समापन - 15 दिवसीय संघ शिक्षा वर्ग में 242 शिक्षार्थियों ने लिया भाग

सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण, नागरिक कर्तव्य और स्वदेशी जैसे पांच प्रमुख विषयों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुखता से काम कर रहा है। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिमाचल प्रांत के संघ शिक्षा वर्ग सामान्य के समापन समारोह में मुख्य वक्ता हरीश चन्द्र ने कही। वर्ग का समापन ठाकुर राम सिंह स्मृति न्याय टिप्पर (हमीरपुर) में हुआ। वर्ग के समापन समारोह में आरएसएस के उत्तर क्षेत्र के सह प्रचारक प्रमुख हरीश चंद्र मुख्य वक्ता रहे, जबकि मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त उप निदेशक एवं भूतपूर्व सैनिक राजकुमार रहे। ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सबसे पहले वर्ग में आए शिक्षार्थियों ने यहां सीखी शारीरिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता ने कहा कि आगामी वर्ष में आरएसएस की स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो रहे है। वर्तमान में पूरे देशभर के सभी जिला में संघ के कार्य का विस्तार हुआ है। उन्होंने संघ की पृष्ठभूमि पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पहले चरण में संघ ने संगठन निर्माण का कार्य किया। दूसरे चरण में विविध संगठन गठित कर समाज के हर वर्ग को देश के निर्माण में जोड़ने की दिशा में काम किया। तीसरे चरण में आपातकाल जैसे समय का सामना किया। उसके बाद 90 के दशक में समाज जागरण जैसे मुद्दों को प्रमुखता से लोगों के बीच रखकर राम मंदिर आंदोलन, स्वदेशी, सामाजिक समरसता जैसे विषयों को उठाया। अब शताब्दी वर्ष में सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण, नागरिक कर्तव्य और स्वदेशी जैसे पांच प्रमुख विषयों पर देशभर में काम कर रहा है। वहीं, समारोह के मुख्यातिथि ने अपने संबोधन में कहा कि आरएसएस से जुड़कर युवा नशे जैसे बुराई से दूर रह रहे हैं। उन्होंने कहा कि जो लोग सेना में नहीं जा सकते हैं, वह आरएसएस से जुड़कर भी देशहित के कार्य में अपना योगदान दे सकते हैं। संघ शिक्षा वर्ग में कुल 242 शिक्षार्थियों ने भाग लिया। जिसमें हिमाचल प्रदेश के सभी जिला की सहभागिता रही। इसके अतिरिक्त हिमाचल से बाहर दूसरे प्रदेशों से भी दस शिक्षार्थियों ने भाग लिया। इस मौके पर आरएसएस के सह प्रांत संघचालक अशोक कुमार, वर्ग के सर्वाधिकारी शांति स्वरूप, प्रांत कार्यवाह डॉ किस्मत कुमार, सह प्रांत प्रचारक ओम प्रकाश आदि उपस्थित रहे। ◆◆◆

युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत

आरएसएस से जुड़कर युवा नशे जैसी बुराइयों से दूर रह सकते हैं और सेना में न जा सकने वाले लोग संघ के माध्यम से देशहित के कार्यों में योगदान दे सकते हैं।

1 जुलाई 2024 से लागू हुए नए कानून

भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम तीन नए आपराधिक कानून, 1 जुलाई, 2024 से लागू हो गए। भारतीय न्याय संहिता कानून अब आईपीसी (इंडियन पीनल कोड) की जगह लेगा। ये तोनों बिल संसद के शीतकालीन सत्र में पारित किए गए थे। नए कानून में धारा 375 और 376 की जगह बलात्कार की धारा 63 होगी। सामूहिक बलात्कार की धारा 70 होगी, हत्या के लिए धारा 302 की जगह धारा 101 होगी। भारतीय न्याय संहिता में 21 नए अपराधों को जोड़ा गया है, जिसमें एक नया अपराध मॉब लिंचिंग है। इसमें मॉब लिंचिंग पर भी कानून बनाया गया है। 41 अपराधों में सजा को तथा 82 अपराधों में जुर्माना बढ़ाया गया है। नए कानून के मुताबिक, आपराधिक मामलों में सुनवाई समाप्त होने के 45 दिनों के भीतर फैसला आएगा। पहली सुनवाई के 60 दिनों के भीतर आरोप तय किए जाएंगे। सभी राज्य सरकारों को गवाहों की सुरक्षा और सहयोग सुनिश्चित करना होगा। बलात्कार पीड़िताओं के बयान महिला पुलिस अधिकारी की ओर से पीड़िता के अभिभावक या रिश्तेदार की मौजूदगी में दर्ज किए जाएंगे। मेडिकल रिपोर्ट सात दिनों के भीतर पूरी होनी चाहिए। कानून में महिलाओं और बच्चों के प्रति होने वाले अपराधों पर एक नया अध्याय जोड़ा गया है। इसमें बच्चे को खरीदना या बेचना एक जघन्य अपराध की श्रेणी में रखा गया है, जिसके लिए कड़ी सजा का प्रावधान है। नाबालिग के साथ सामूहिक बलात्कार के लिए मौत की सजा या आजीवन कारावास की सजा हो सकती है। नए कानून में अब उन मामलों के लिए सजा का प्रावधान शामिल है जिसके तहत महिलाओं को शादी का झूठा वादा करके या गुमराह करके छोड़ दिया जाता है। इसके अलावा नए कानून में महिलाओं के खिलाफ अपराध के पीड़ितों को 90 दिनों के भीतर अपने मामलों पर नियमित अपडेट प्राप्त करने का अधिकार होगा। सभी अस्पतालों को महिलाओं और बच्चों से जुड़े अपराध के मामले में मुफ्त इलाज करना जरूरी होगा। आरोपी और पीड़ित दोनों को 14 दिनों के भीतर एफआईआर, पुलिस रिपोर्ट, चार्जशीट, बयान, इकबालिया बयान और अन्य दस्तावेजों की कॉपी प्राप्त करने का अधिकार है। इसके अलावा इलेक्ट्रॉनिक संचार के माध्यम से घटनाओं की रिपोर्ट की जा सकेगी, जिससे पुलिस स्टेशन जाने की जरूरत समाप्त हो सकेगी। अब गंभीर अपराधों के लिए फोरेंसिक विशेषज्ञों का घटनास्थल पर जाना और साक्ष्य एकत्र करना अनिवार्य होगा। लिंग की परिभाषा में अब ट्रांसजेंडर लोग भी शामिल होंगे, जो समानता को बढ़ावा देता है। महिलाओं के खिलाफ कुछ अपराधों के लिए जब भी संभव हो, पीड़ित के बयान महिला मजिस्ट्रेट की ओर से ही दर्ज किए जाने का प्रावधान है। ◆◆◆

धर्मांतरण पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय का ऐतिहासिक फैसला

हिंदुओं को जबरन ईसाई बनाए जाने से हिंदुओं के अल्पसंख्यक होने का खतरा

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने धर्मांतरण (मतांतरण) की प्रवृत्ति को लेकर गंभीर टिप्पणी करते हुए कहा है कि यदि धार्मिक सभाओं में धर्मांतरण की प्रवृत्ति जारी रही तो एक दिन भारत की बहुसंख्यक आबादी अल्पसंख्यक हो जाएगी। कोर्ट ने कहा धर्मांतरण करने वाली धार्मिक सभाओं पर तत्काल रोक लगाई जानी चाहिए।

ऐसे आयोजन संविधान के अनुच्छेद 25 द्वारा प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के विरूद्ध हैं। यह अनुच्छेद किसी को भी धर्म मानने व पूजा करने व अपने धर्म का प्रचार करने की स्वतंत्रता देता है। धर्म प्रचार की स्वतंत्रता किसी को धर्म परिवर्तन कराने की अनुमति नहीं देती।

कोर्ट ने टिप्पणी की है कि हिंदुओं को जबरन इसाई बनाया जा रहा है। यह आदेश न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल ने हिंदुओं को ईसाई बनाने के आरोपी मौदहा, हमीरपुर के कैलाश की जमानत अर्जी को खारिज करते हुए दिया है। रामकली प्रजापति ने प्राथमिकी दर्ज कराई कि उसका भाई मानसिक रूप से बीमार था, उसे बीमारी की हालत में एक हफ्ते के लिए दिल्ली ले जाया गया कि उसका इलाज करवाने के बाद गांव वापस कर देंगे। किंतु वह वापस नहीं आया। जब आया तो गांव के अन्य लोगों को दिल्ली में आयोजित आयोजन में ले गया। जहां उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया। इसके बदले शिकायतकर्ता के भाई को पैसे दिए जाते हैं। कोर्ट ने कहा , संविधान धर्म प्रचार की छूट देता है, धर्म बदलवाने की अनुमति नहीं है । उस पर आरोप है कि गांव के तमाम हिन्दू लोगों को ईसाई बना दिया गया है। यह षडयंत्र भारत के कई प्रांतों और अनेकों गांव में चल रहा है। यदि जबरदस्ती किए जाने वाले धर्म परिवर्तन को नहीं रोका गया तो बहुत सारे हिंदू ईसाई और मुस्लिम मत में चले जाएंगे और भारत की पारंपरिक हिंदू संस्कृति तहस-नहस हो जाएगी। ◆◆◆

धर्मांतरण से बहुसंख्यक हिंदुओं की संख्या अल्पसंख्यक हो जाएगी।

लालच देकर हिंदुओं को ईसाई बनाने का षड़यंत्र चल रहा है

उत्तर प्रदेश सरकार को धर्मांतरण रोकने के लिए माननीय उच्च न्यायालय के आदेश पर कड़ा संज्ञान लेने की जरूरत

रूपधारी धर्म

धर्म को पुष्ट बनाने वाले साधनों में सबसे अधिक प्रभावी पंथ-सम्प्रदाय है। उन पंथों के पुरस्कर्त्ता महात्माओं ने सरलतापूर्वक रूपक कथाओं एवं रोचक प्रसंगों द्वारा हमारे सामने धर्म का महत्त्व उजागर किया है। निराकार धर्म को साकार कथापात्र के नाते उन्होंने समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

जब कुलवधू द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था तब उनकी हृदयविदारक आर्त्त पुकार सुनकर द्वारका का कृष्ण धर्म का अदृश्य रूप धारण कर उनकी लाज बचाता है। अत्यन्त विकट परिस्थिति में धर्म यक्ष का रूप धारण कर युधिष्ठिर से प्रश्न करते हैं कि धर्म के पास पहुँचने के द्वार कौन से हैं? अहिंसा, समता, शान्ति, दया एवं अमत्सर। यह उत्तर मिलते ही वे अपना स्वरूप प्रकट कर वर देते हैं कि अज्ञातवास में तुम कौरवों से सुरक्षित रहोगे।

धर्म के महत्त्व को पंथ-सम्प्रदायों और महात्माओं ने रूपक कथाओं द्वारा उजागर किया। धर्म सृष्टिकर्ता ब्रह्मा का पुत्र है, जबकि अधर्म असत्य (मृषा) के साथ जन्मा। धर्म मानव के कल्याणकारी, अधर्म अहितकारी है।

इसी प्रकार कठोर परीक्षक धर्म कुत्ते का रूप धारण कर धर्मराज युधिष्ठिर की अन्तिम परीक्षा लेने हेतु उनके महाप्रस्थान की वेला में आता है और धर्मपुत्र की अव्यभिचारी धर्मनिष्ठा से अतीव सन्तुष्ट होकर कहता है- हे भरतश्रेष्ठ! आपने अत्युत्तम विभूतिमत्व प्राप्त किया है।

भागवत पुराण में धर्म सम्बन्धित रूपक कथा अत्यन्त प्रबोधक है। कथा में पात्रों के नाम स्वयं धर्म के महत्त्व के परिचायक हैं। वे सारी गुणद्योतक, संज्ञाएँ हैं। कथा में जो प्रसंग दिये गये हैं वे भी प्रतीकात्मक हैं। थोडा सोचने पर उसका भी अन्तरार्थ या तात्पर्य आसानी से अवगत होता है।

धर्म है सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी का पुत्र। उसका जन्म हुआ प्राणदाता के दाहिने स्तन से। प्रजापति ने अपनी तेरह पुत्रियों को धर्म को कन्यादान के रूप में दिया। वे सब धर्म की सहधर्मचारिणियाँ बन गयीं। उनके नाम थे - श्रद्धा, मैत्री, दया, शान्ति, तुष्टि, पुष्टि क्रिया, उन्नति, बुद्धि, मेधा, तितिक्षा, लज्जा और मूर्ति। अन्तिम कन्या मूर्ति की दो संतान थीं। शेष सबकी एक-एक। इस प्रकार कुल संतानें चौदह थीं । धर्म-श्रद्धा युति से शुभ, धर्म-मैत्री युति से प्रसाद, धर्म-दया युति से अभय, धर्म-शान्ति युति से सुख, धर्म- तुष्टि युति से मुद (हर्ष), धर्म-पुष्टि युति से स्मय (अभिमान), धर्म-क्रिया युति से योग, धर्म-उन्नति युति से दर्प, धर्म-बुद्धि युति से अर्थ, धर्म- मेधा युति से स्मृति, धर्म-उन्नति युति से क्षेप, धर्म-ह्री (लज्जा) युति से प्रश्रय (विनय-सृजनता) इन सबका आविर्भाव हुआ। अन्तिम धर्म-मूर्ति युगल से नर और नारायण का उदय हुआ।

वास्तव में यह कथा इस निबंध के प्रारम्भ में उद्धृत वृहदारण्यकोपनिषद् के वाक्य का कथारूपी आविष्कार है। कथा में आदिशक्ति सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी का रूप लेती है और उसके द्वारा सृष्ट धर्म उस ब्रह्मा का पुत्र बन जाता है। आगे का कथानक स्वयं स्पष्ट है।

ऐसे ही अधर्म सम्बन्धित रूपक कथा भी है। उसको भी समझना लाभकारी होगा। उससे हमारी धर्मविषयक धारणा अधिक स्पष्ट होगी। भागवत, पद्मपुराण आदि के अनुसार अधर्म ब्रह्माजी के उत्पन्न धर्मविरोधी पुरुष हैं; अर्थात् जब धर्म ब्रह्माजी के दाहिने स्तन से उत्पन्न हुआ तब यह अधर्म पृष्ठ से बाहर निकला। उस अधर्म की पत्नी है मृषा जिसका अर्थ है असत्य। अधर्म और मृषा की संतान थी दंभ और माया। वे दोनों मिथुन बन गये और उनसे लोभ और निकृति (कपटता) का जन्म हुआ। आगे चलकर उस कुल में क्रोध, हिंसा, भय, यातना आदि संतानों ने जन्म लिया ।

इन दो रूपक कथाओं का संदेश क्या है ? धर्म एवं अधर्म, दोनों का जन्म एक शरीर से है, धर्म का जन्मकेन्द्र है जीवामृत पिलाने का स्तन; अधर्म का है, मल निकलने वाला पृष्ठ! धर्म से विवाहित गुण मानव समूह के लिए कल्याणकारी हैं, मानव को प्रकृति से संस्कृति की दिशा में उन्नयन करने वाले हैं। जबकि अधर्म और मृषा के संयोग से निकलने वाला परिणाम-दंभ, लोभ, क्रोध जैसे अवगुण मानव समूह के लिए अहितकारी हैं और उसे प्रकृति से विकृति की ओर अवनयन करनेवाले हैं। अर्थात् धर्म उन्मार्गी है जबकि अधर्म कुमार्गी है।◆◆◆

रामपुर के पवन धंगल को मरणोपरांत कीर्ति चक्र

हिमाचल प्रदेश के रामपुर उपमंडल के पिथवी गांव के शहीद पवन कुमार धंगल को मरणोपरांत कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया है। दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में आयोजित सम्मान समारोह में शहीद पवन कुमार धंगल की माता भजन दासी और पिता शिशुपाल ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के हाथों यह सम्मान प्राप्त किया है। पवन कुमार धंगल ने ज्यूरी स्कूल से ही अपनी दस जमा दो तक की पढ़ाई पूर्ण की और ज्यूरी बाजार में ही अपना बचपन गुजारा था।

27 फरवरी, 2023 को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले के एक गांव में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ के दौरान एक आतंकी को मार गिराकर पवन शहीद हो गए थे। पुलवामा के एक गांव में आतंकवादियों के छुपे होने की सूचना के बाद घेराबंदी करने के लिए सेना की टुकड़ी रवाना हुई थी। सेना की इस टुकड़ी में रामपुर उपमंडल के पिथवी गांव के सिपाही पवन कुमार भी शामिल थे। पिछले वर्ष शहीद पवन कुमार के पार्थिव शरीर को उनके घर लाने वाले सहयोगियों ने बताया था कि टीम ने सारे गांव में सर्च ऑपरेशन चलाया, लेकिन आतंकी कहीं नहीं मिले। आखिर में गांव की एक मस्जिद में सर्च ऑपरेशन शुरू किया, तो पवन कुमार सबसे पहले मस्जिद के दरवाजे से अंदर गए। मस्जिद के अंदर घात लगाए एक आतंकी ने गोलियां चला दीं। इस दौरान दूसरे साथी को गोलियां लगीं तो पवन कुमार ने उसे पीछे धकेल दिया। पवन ने घायल अवस्था में ही अदम्य साहस का परिचय देते हुए आतंकी की बंदूक को मुंह के पास से ऊपर की ओर मोड़ दिया। बंदूक को मुंह के पास से पकड़ने के कारण पवन कुमार का हाथ भी जल गया था। मस्जिद के अंदर ही छिपे एक और आतंकी ने पवन कुमार की पीठ पर अंधाधुंध गोलियां बरसा दीं। इस कारण वे गंभीर घायल हो गए। इस अवस्था में भी पवन ने एक आतंकी को मार गिराया, लेकिन अधिक खून बह जाने के कारण पवन को डॉक्टर नहीं बचा पाए और वे देश के लिए बलिदान हो गए। बलिदानी पवन कुमार के पिता शिशुपाल धंगल ने कहा कि पुत्र को मरणोपरांत कीर्ति चक्र से सम्मानित होने पर वे गौरवान्वित हैं। बेटे के बलिदान ने परिवार और क्षेत्र का मान बढ़ाया है। यह देश, प्रदेश और रामपुर क्षेत्र के लिए गौरव की बात है।◆◆◆

कुप्पवी के कुलभूषण मांटा को भी मरणोपरांत मिला शौर्य चक्र

राइफलमैन कुलभूषण मांटा हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के कुपवी क्षेत्र के मझौली पंचायत के गोंथ गांव के निवासी थे। 1996 में जन्मे कुलभूषण श्री प्रताप और श्रीमती दुर्गा देवी के पुत्र थे और उनकी तीन बहनें रेखा, किरण और रजनी थीं। बचपन से ही सेना में सेवा करने की इच्छा रखने वाले कुलभूषण ने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद 2014 में 18 साल की उम्र में भारतीय सेना में भर्ती हुए। उन्हें जम्मू और कश्मीर राइफल्स रेजिमेंट की 18वीं बटालियन में शामिल किया गया।

सेवा के कुछ वर्षों बाद, उन्होंने सुश्री नीतू से विवाह किया और उनका एक पुत्र हुआ। 2022 तक, उन्होंने लगभग आठ वर्षों की सेवा पूरी कर ली थी। अपनी मूल इकाई में सेवा करने के बाद, कुलभूषण मांटा को जम्मू-कश्मीर में तैनात 52 आरआर बटालियन के साथ आतंकवाद विरोधी अभियानों के लिए नियुक्त किया गया। अक्टूबर 2022 में, 52 आरआर बटालियन को बारामूला जिले में तैनात किया गया। 26 अक्टूबर को, खुफिया जानकारी के आधार पर वाशरन गांव में आतंकवादियों के खिलाफ तलाशी और घेराबंदी अभियान शुरू किया गया। ऑपरेशन के दौरान, कुलभूषण मांटा ने एक आतंकवादी को जिंदा पकड़ा। दूसरे आतंकवादी की गोलीबारी में वे घायल हो गए, लेकिन उन्होंने अपनी बहादुरी से अपने साथी सैनिकों की जान बचाई। गंभीर चोटों के बावजूद, कुलभूषण मांटा ने आतंकवादियों का पीछा किया। उन्हें उपचार के लिए बारामुल्ला और फिर श्रीनगर ले जाया गया, लेकिन 27 अक्टूबर को वे शहीद हो गए। कुलभूषण मांटा को उनकी बहादुरी और कर्तव्य के प्रति समर्पण के लिए मरणोपरांत शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति भवन दिल्ली में आयोजित समारोह में उनकी पत्नी नीतू और मां दुर्गा देवी ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से यह सम्मान प्राप्त किया। इस दौरान नीतू और दुर्गा देवी भावुक थीं। उनके बलिदान ने सभी को गर्व महसूस कराया।◆◆◆

खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में हिमाचल को सर्वश्रेष्ठ राज्य पुरस्कार

हिमाचल को खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में नवीन कार्यक्रम शुरू करने और इसके कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ राज्य पुरस्कार-2024 से सम्मानित किया गया। एग्रीकल्चर टुडे ग्रुप ने यह कार्यक्रम आयोजित किया। केंद्रीय सडक़ परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने यह पुरस्कार प्रदान किया। उद्योग विभाग को दिए गए इस पुरस्कार को रेजिडेंट कमिश्नर मीरा मोहंती ने नई दिल्ली में प्राप्त किया। हिमाचल में सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उत्पादों के 3 इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं। इस योजना के तहत 1320 व्यक्तिगत सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों को मंजूरी दी गई है। उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान ने पुरस्कार मिलने पर उद्योग विभाग को बधाई दी है। पिछले कुछ वर्षों में राज्य ने अपने खाद्य प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे को बढ़ाया है। इसमें 23 नामित खाद्य पार्क, एक समर्पित मेगा फूड पार्क, जिला कांगड़ा और सोलन में 2 कृषि प्रसंस्करण क्लस्टर, 18 कोल्ड चेन परियोजनाएं शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष भी भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की ओर से आयोजित विश्व खाद्य भारत कार्यक्रम में राज्य प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकीकरण (पीएमएफएमई) योजना के तहत उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाला राज्य घोषित हो चुका है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की ओर से हिमाचल प्रदेश के उद्योग निदेशक राकेश प्रजापति को इस पुरस्कार से नवाजा गया था।◆◆◆

नाटी किंग कुलदीप शर्मा वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड यूके लंदन अवार्ड से सम्मानित
हिमाचल प्रदेश के लिए गौरव का क्षण

बेकार सामान से सजावटी चीज़ें बनाकर कर रहीं कमाई

ललिता बगैर

उपमंडल पधर के गांव नगरोटा की महिलाओं की आम दिनचर्या चूल्हे-चौके और खेत-खलिहानों में कार्य करने तक हीं सीमित थी। पढ़ी-लिखी होने के बाबजूद वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं थी और परिवार की आय में ज्यादा योगदान नहीं दे पा रही थी। इनमें से कई महिलाएं आम दिनचर्या के साथ-साथ कुछ न कुछ ऐसा कार्य करना चाहती थीं, जिससे उन्हें घर-गांव में ही रोजगार मिल सके और वे कुछ आय अर्जित कर सकें। खंड विकास अधिकारी कार्यालय के अधिकारियों ने ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत स्वयं सहायता के गठन के लिए प्रेरित किया। इसके बाद पाली पंचायत के नगरोटा गांव की महिलाओं ने शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह नाम से महिला स्वयं सहायता समूह का गठन किया। इस समूह को एक लाख रुपये का ऋण मिला, जिससे समूह की सदस्यों ने बेकार सामान से जैसे पुरानी सीडी से खाली शीशे की बोतलों, बिजली, की तांबे की तारों से कई तरह की कलाकृतियों को तैयार करके सजावटी चीजें बनाई, जिनसे घरों को सजाया जा सकता है। इसी काम से महिलाएं मेलों, प्रदर्शनियों आदि में स्टॉल लगाकर आजीविका भी कमा रही हैं। समूह की सदस्य मुस्कान शर्मा, रेशमा शर्मा, अदिति शर्मा और गुड्डी देवी ने बताया कि जब स्वयं सहायता समूह का गठन किया तब सरकार की तरफ से उन्हें 15 हजार रुपये की राशि मिली। उन्होंने बेकार सामान से कई तरह की कलाकृतियों से सजावटी चीजें बनाई। उनकी मदद से घरों को सजाया जा सकता है। समूह की पदाधिकारी रेशमा शर्मा ने बताया कि इस छोटे से उद्यम में महिलाओं को अपने गांव में ही अच्छा रोजगार मिला है और वे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बन रही हैं।

सालाना 1 से 2 लाख की हो रही आमदनी

शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह की सदस्य मुस्कान शर्मा ने बताया कि वह और उनका समूह कई मेलों और प्रदर्शनियों में स्टॉल लगा चुके हैं। वे लोगों को भी जागरूक करते हैं कि घरों में पुराने सामान से वह किस तरह सजावटी सामान बना सकते है। उन्होंने बताया कि ब्लॉक द्रंग की तरफ से उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय शिवरात्रि के सरस मेले में स्टॉल लगाया था और संस्कृति विभाग की तरफ से प्रदर्शनी भी लगाई थी और ऑनलाइन भी सामान की बिक्री करते हैं, इससे उन्हें सालाना लगभग एक से दो लाख रूपए की आमदनी हो जाती है। इससे इस समूह की आय में काफी बढ़ोतरी हो रही है।◆◆◆

किन्नर कैलाश पर बनी ॐ जैसी आकृति

1 अगस्त से 26 अगस्त तक होगी पहली बार पूर्वनी गाँव के रास्ते से यात्रा

... रतन लाल नेगी

इस बार दो रास्तों से श्रद्धालु पवित्र किन्नौर कैलाश का यात्रा कर सकते हैं। किन्नर कैलाश पर ॐ जैसी आकृति दिखने से शिव भक्त आश्चर्यचकित हो गए। जनजाति जिला किन्नौर के कल्पा ब्लॉक के तांगलिंग गाँव स्थित पोवारी में 19 हजार 850 फीट पर स्थित किन्नर कैलाश यात्रा जो कि प्रशासन द्वारा आधिकारिक तौर पर इस साल एक अगस्त से 26 अगस्त तक दो रास्तों से होगी। उसमें श्रद्धालुगण इस बार किन्नर कैलाश के दर्शन कर सकेंगे। इस साल पोवारी गांव के तांगलिंग और पुर्वनी गाँव के रास्ते यह यात्रा शुरू हो रही है। किन्नर कैलाश कल्पा ब्लॉक के पोवारी गांव की पहाड़ी पर 19 हजार 850 फीट पर भगवान शिव का प्राकृतिक शिवलिंग स्थित है। यह शिवलिंग किसी व्यक्ति द्वारा नहीं बनाया गया है, बल्कि प्राकृतिक रूप से निर्मित हुआ है। इस पवित्र शिवलिंग की धार्मिक मान्यता को देखते हुए माना जाता है कि पांडवों ने अपने अज्ञातवास का अंतिम समय इसी स्थान पर गुजारा था। यहां के बारे में एक मान्यता यह भी है कि महाभारत काल में किन्नर कैलाश का नाम इंद्र कील पर्वत था। इस स्थान पर भगवान शिव और अर्जुन का युद्ध हुआ था। इसके उपरांत भगवान शिव ने अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्रदान किया था। इन सभी मान्यताओं के आधार पर किन्नर कैलाश शिवलिंग को अपने आप में एक अद्भुत शिवलिंग माना जाता है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार शिव के पांच कैलाशों में से एक किन्नर कैलाश किन्नौर जिला में स्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव हर वर्ष सर्दियों में किन्नर कैलाश शिखर पर देश के समस्त देवी-देवताओं की बैठक आयोजित करते हैं। मान्यता यह भी है कि किन्नौर के देवी-देवता द्वारा सबसे पहले कैलाश पर्वत की पूजा की जाती है। सभी देवी-देवताओं के प्रवास के दौरान विविध क्षेत्रों के स्वामी देवताओं को सुफल प्राप्त होता है। किन्नर कैलाश को शिव और-पार्वती की साधना स्थली भी माना जाता है।

किन्नर कैलाश में 19,850 फीट पर भगवान शिव का प्राकृतिक शिवलिंग स्थित है, जिसे पांडवों के अज्ञातवास से जोड़ा जाता है। इसे इंद्र कील पर्वत भी कहा जाता था, जहां शिव और अर्जुन का युद्ध हुआ था। शिवलिंग दिन में तीन रंग बदलता है। इस साल 1 से 26 अगस्त तक यात्रा के लिए तांगलिंग और पुर्वनी गाँव से दो रास्ते खुले हैं।

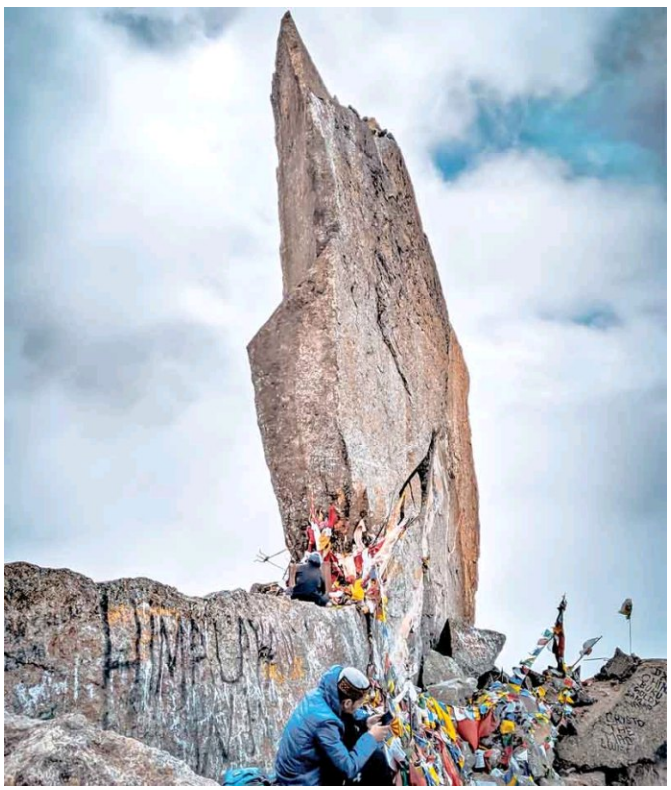

पिछले साल 16 अगस्त से 31 अगस्त तक किन्नर कैलाश यात्रा हुई थी। इस यात्रा के दौरान किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना पेश नहीं आई थी। पिछले साल तक देश और बाहरी राज्यों के 3072 श्रद्धालुओं ने महादेव के दर्शन के लिए किन्नर कैलाश यात्रा की थी। पिछले साल नवरात्रों के दिनों में हुए अद्भुत चमत्कारों से सभी शिवभक्त आश्चर्यचकित रह गए थे। कई शिव भक्तों ने किन्नर कैलाश पर ॐ जैसी आकृति देखी और तुरंत इसकी अपनी मोबाइल पर वीडियो बना ली। नवरात्रों के दौरान भगवान शिव के चमत्कारों से किन्नर कैलाश पर शिव भक्तों की आस्था और भी बढ़ गई। इस शिवलिंग की एक चमत्कारिक बात यह है कि यह दिन में तीन रंग बदलता है। सुबह काला, दोपहर में सफेद व चार बजे तक सुनहरी रंग कल्पा से देखने पर स्पष्ट दिखाई देता है। जिला पर्यटन अधिकारी व एसडीएम कल्पा डॉक्टर मेजर शशांक गुप्ता ने कहा कि इस साल एक अगस्त से 26 अगस्त तक दो रास्तो के माध्यम से श्रद्धालु यात्रा कर सकते हैं। एक तो पुराना रास्ता तंगलिंग गाँव और दूसरा नया रास्ता पुर्वनी गाँव से भी श्रद्धालु पवित्र शिवलिंग का दर्शन कर सकते है। ◆◆◆ **लेखक किन्नौर जिला से वरिष्ठ पत्रकार हैं।**

देशभक्त और देशभक्ति : हिमाचल प्रदेश के स्वतंत्रता नायक

सूरतराम प्रकाश-प्रधानमंत्री, ठियोग रियासत प्रजामण्डल सरकार

(15 अगस्त से 28 दिसम्बर, 1947)

श्रीमती कृष्णा प्रकाश, सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
राजकीय डिग्री कालेज, धर्मपुर

भारतवर्ष की आज़ादी का सफर कठिन, दुरूह और जटिल था। इस ऐतिहासिक क्षण के आगमन का मार्ग प्रशस्त करने में संघर्ष और बलिदानों की एक लंबी श्रृंखला स्पष्ट देखी जा सकती है। कांग्रेस के नेतृत्व में स्वाधीनता संग्राम मुख्यतः ब्रिटिश इण्डिया में केन्द्रित था। परन्तु हिमाचल प्रदेश का पहाड़ी क्षेत्र जो ब्रिटिश इण्डिया से बाहर देशी रियासतों के अधीन था नें भी इस पुनीत कार्य में यथोचित योगदान दिया। राजनैतिक चेतना और देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत स्थानीय नायको नें प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में प्रजामण्डलों की स्थापना की। इन प्रजामण्डलों नें स्थानीय राजाओं/ठाकुरों से स्वतंत्रता की लड़ाई अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के सहयोग से लड़ी। ठियोग प्रजामण्डल नें इस कार्य को बड़े प्रभावी ढंग से पूरा किया और 15 अगस्त 1947 को ही स्वतंत्र सरकार बना डाली और साथ ही साथ स्वाधीनता उपरांत 28 दिसम्बर 1947 को भारतीय संघ में विलय की घोषणा कर दी। ठियोग नें इस तरह सर्वप्रथम स्वतंत्र सरकार बनाने और भारतीय संघ में विलय होने का अनूठा गौरव प्राप्त किया। इस सरकार का अपना 8 सदस्यीय मंत्रीमण्डल था। श्री सूरतराम प्रकाश के नेतृत्व में इस मंत्रीमण्डल का गठन हुआ। जिन्होनें न केवल स्वतंत्रता प्राप्ति में सराहनीय योगदान दिया अपितु अनेक सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में भी सक्रिय भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम एक व्यापक, रक्तरंजित व जटिल संग्राम था जिसमें हिमाचल प्रदेश के अनेक स्थानीय नेताओं और विचारकों नें अपनी पूरी निष्ठा से अप्रतिम योगदान दिया। परन्तु यह शोध पत्र केवल श्री सूरतराम प्रकाश की स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, राजनीतिक दृष्टि, सामाजिक चेतना, क्रियाशीलता और आदर्श जननायक रूपी छवि के ऊपर केंद्रित हैं और इसी विषय पर मैं आगे विस्तार से चर्चा करूंगी।

सूरत राम प्रकाश का जीवन परिचय

सूरतराम प्रकाश का जन्म ठियोग रियासत के गॉव भझैवग में 1912 में हुआ। ये लबदुराम की पुत्र व पुत्री के रूप में दो सन्तानों में बड़े थे। श्री लबदु राम एक निडर व साहसी व्यक्ति थे। जब अंग्रेज़ों नें एक षडयंत्र के तहत ठियोग के तत्कालीन राणा शमशेर चंद की मृत्यु के पश्चात वास्तविक उतराधिकारी श्री खड़क सिंह को पदच्युत करके पदमचन्द को राजगद्दी पर बिठाया तो लबधु राम नें अन्य साथियों सहित पदच्युत राणा खड़क सिंह का साथ दिया। जिसके लिए उन्हें लुधियाना जेल भी भेजा गया। सूरत राम को बचपन से ही सत्य का साथ देने व अन्याय के विरूद्ध लड़ना सिखाया गया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा ठियोग रियासत में आर्य समाज की सहायता से खोले गए आर्य समाज विद्या प्रचारिणी सभा स्कूल में हुई। मिडल स्तर की शिक्षा के लिए सूरतराम को जुन्गा भेजा गया, क्योंकि अंग्रेज़ों व रियासती सरकार नें आर्य समाज के इन स्कूलों को बंद कर दिया था। 1927 में पिता के असामयिक निधन के कारण उच्च शिक्षा प्राईवेट(दूरस्थ) ग्रहण की। बचपन से ही उन्हें पढ़ने का शौक था। वह महात्मा गॉधी, विनोवा भावे तथा महादेव देसाई के विचारों से बहुत प्रभावित थे और उन्होनें खादी पहनना व घर पर कताई करना भी आरम्भ कर दिया। उन्होनें व्यक्तिगत रूप से सत्य व अहिंसा का प्रयोग भी आरम्भ किया। उन्होने सर्वोदय विचारधारा का जीवन पर्यन्त अनुपालन किया। वे आर्य समाजी थे और स्वामी दयानंद द्वारा लिखित पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' से प्रेरणा पाकर उन्होनें अपने नाम के साथ प्रकाश लिखना आरम्भ कर दिया था। उन्हें छोटी उम्र में पिता के आकस्मिक निधन से पारिवारिक ज़िम्मेदारियॉ उठानी पड़ीं परंतु देशभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा तथा आम जनता की सेवा का भाव हमेशा मन में रहा। जिसके कारण 15 अगस्त 1947 को ठियोग में लोकतांत्रिक सरकार का गठन करने में सक्रिय भूमिका निभाई।

ठियोग प्रजामण्डल की स्थापना :

शिमला हिल स्टेटस अनेक छोटी-बड़ी रियासतों से मिल कर बना था, जिसमें ठियोग भी एक रियासत थी। जो उपरी गिरी नदी घाटी में स्थित थी। जिसकी नींव जयचंद नें रखी थी। उस समय ठियोग रियासत व अन्य रियासतें घूण्ड, मधान, बलसन आदि सनद के तहत क्योंथल के अधीन थी। वर्ष 1857 की क्रांति से शिमला की पहाड़ी रियासतें भी अछूती नहीं रही। इन पहाड़ी रियासतों नें भी इस क्रांति में बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। 1858 में महारानी विक्टोरिया नें अपने घोषणा पत्र में देशी रियासतों के शासकों के प्रति एक नई नीति की घोषणा की।

क्रमशः

धामी गोली कांड

... पूर्ण प्रकाश

हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले का धामी क्षेत्र आजादी से पहले रियासत रही है। धामी रियासत के लोगों ने अपनी रियासत में सुधार लाने के उद्देश्य से 1937 ई. में एक 'प्रेम प्रचारिणी सभा' गठन किया । बाबा नारायण दास को इसका अध्यक्ष और पं. सीता राम को मंत्री बनाया गया। इसी दौरान धामी रियासत की 'प्रेम प्रचारिणी सभा' ने सरकार के दमन से बचने के लिए रियासती प्रजा मण्डल शिमला में शामिल होने की योजना बनाई। इसी उद्देश्य को लेकर 13 जुलाई, 1939 ई. को भागमल सौहटा की अध्यक्षता में शिमला के निकट कुसुम्पटी के पास कैमली स्थान पर शिमला की पहाड़ी रियासतों के प्रजा मण्डलों की एक बैठक हुई। इस बैठक में धामी रियासत की 'प्रेम प्रचारिणी सभा' को 'धामी प्रजा मण्डल' में बदल दिया गया तथा धामी के पण्डित सीता राम को इसका प्रधान नियुक्त किया गया। इस अवसर पर धामी प्रजा मण्डल की ओर से एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें राणा धामी से निम्नलिखित माँगें की गई कि -

- धामी प्रजा मण्डल को मान्यता प्रदान की जाए।

- बेगार प्रथा को समाप्त किया जाए।

- भूमि लगान में उचित कमी की जाए।

- लोगों को नागरिक अधिकारों की स्वतन्त्रता दी जाए।

- राज्य की जनता पर लगाए गए प्रतिबन्ध और अवरोधों को समाप्त किया जाए।

- धामी में एक प्रतिनिधि उत्तरदायी सरकार का गठन किया जाए और उसमें जनता के प्रतिनिधियों को भी प्रशासकीय कार्यों में नियुक्त किया जाए।

इस प्रस्ताव में व्यक्त किया गया कि यदि रियासत के शासक की ओर से उनके माँग पत्र पर शीघ्र कोई उत्तर नहीं मिला तो 16जुलाई को सात व्यक्तियों का एक शिष्टमण्डल हलोग आकर राणा से मिलेगा और अपनी बात राणा के सामने रखेगा। इसके लिए मंशा राम को विशेष प्रतिनिधि बनाकर यह माँग पत्र राणा के पास धामी भेजा गया। राणा ने इसे अपना अपमान समझ कर उत्तर नही दिया।

16जुलाई, 1939 ई. को हिमालय रियासती प्रजामण्डल, शिमला तथा धामी प्रजामण्डल के सदस्यों का एक शिष्टमण्डल भागमल सौहटा के नेतृत्व में राणा से मिलने राजधानी 'हलोग' गया। इस शिष्टमण्डल में सर्वश्री भागमल सौहटा, हीरासिंह पाल, मनशा राम चौहान, पंडित सीता राम, बाबू नारायण दास, भगतराम, और गौरी सिंह सम्मिलित थे। जब शिष्टमण्डल घणाहट्टी पहुँचा तो रियासत की पुलिस ने भागमल सौहटा को अपनी हिरासत में ले लिया और कौमी झण्डा छीन कर जला दिया। इस पर शिष्ट मण्डल के सदस्यों ने नारे लगाने आरम्भ किये, जिससे लोगों में जोश फैल गया। 'महात्मा गांधी जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए शिष्टमण्डल के सदस्य आगे बढ़ते रहे। रास्ते में और भी लोग इनके साथ मिलते गए और शिष्टमण्डल भारी जुलूस में बदल गया। रियासत धामी की राजधानी हलोग पहुँचने तक लगभग 1000-1500 लोग जुलूस में शामिल हो चुके थे। वहां पर पुलिस भागमल सौहटा को थाने की ओर ले गई ।

साथ में मंशा राम चैहान और धर्मदास भी थाने की ओर चले गए जब उत्तेजित जुलूस आगे बढ़ने लगा तो राणा के वफादार सेवकों और पुलिस ने शान्तिपूर्ण जुलूस पर पत्थर बरसाए और गोलियां चलानी शुरू कर दी। डण्डों और लाठियों से पीट कर लोगों को तितर-बितर किया गया। निहत्थे लोगों के शान्तिपूर्ण जुलूस पर इस अचानक हुए आक्रमण में गांव मन्देआ के दुर्गादास और गांव टंगोश के उमादत्त घटनास्थल पर ही गोली लगने से शहीद हो गए। लगभग 80-90 व्यक्ति घायल हुए। कालान्तर में घायलों में से वषमाणा गांव के रूप राम, कालवी के तुलसी राम और चैंईयां के नारायण दास अपंग हो गए थे। रियासती सरकार के आतंक से घबरा कर लगभग 200 धामी निवासी शिमला की ओर भागे और गंज बाजार में तीन महीने शरणार्थी बन कर रहे। धामी रियासत की इस दर्दनाक घटना से शिमला में हलचल मच गई और राणा के विरुद्ध रोष की लहर दौड़ गई। ब्रिटिश सरकार ने घबरा कर धारा 144 लागू कर दी और अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्य लाला दुनीचंद अम्बालवी की अध्यक्षता में एक गैर-सरकारी जांच समिति गठित की गई। इस समिति में टिहरी के देव समन, शिमला कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्याम लाल खन्ना, कांग्रेस कार्यकर्त्ता लाला किशोरी लाल और सिरमौर के पंडित राजेन्द्र दत्त शामिल थे। जांच के दौरान उसने बताया कि राणा धामी ने उससे 100 पुलिस जवान मांगे परन्तु उसने अपने सिपाही देने से इन्कार कर दिया और राणा के भेजे आदमियों को राजा क्योंथल के पास जुन्गा भेजा था। यह पता लगने पर उक्त समिति ने तुरंत क्योंथल निवासी देवी राम केवला को जुन्गा भेजा। देवीराम केवला ने राजा से पुलिस दल धामी न भेजने का आग्रह किया। जब धामी के राणा के वफादार सेवक वहां पहुंचे तो क्योंथल के राजा हेमेन्द्र सेन ने उनसे कहा, मेरे पास अपनी प्रजा को मारने के लिए आदमी नहीं हैं। राजा हेमेन्द्र सेन ने उसी दिन से अपनी रियासत में बेगार प्रथा बन्द कर दी और भूमि लगान भी कम कर दिया।◆◆◆

नालंदा विश्वविद्यालय का गौरवशाली इतिहास

प्राचीन भारत का नालंदा विश्वविद्यालय एक प्रमुख और ऐतिहासिक शिक्षण केंद्र था। यह विश्व का पहला आवासीय विश्वविद्यालय था, जहां पर एक ही परिसर में शिक्षक और छात्र रहते थे। गुप्त सम्राट कुमार गुप्त प्रथम ने नालंदा विश्वविद्यालय की 450 ई. में स्थापना की थी। हर्षवर्धन और पाल शासकों ने भी बाद में इसे संरक्षण दिया। इस विश्वविद्यालय की भव्यता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इसमें 300 कमरे, 7 बड़े कक्ष और अध्ययन के लिए 9 मंजिला एक विशाल पुस्तकालय था। पुस्तकालय में 90 लाख से अधिक किताबें थीं। 10 हजार से अधिक छात्र पढ़ते थे और 1500 से अधिक शिक्षक इन छात्रों को पढ़ाते थे। छात्रों का चयन उनकी मेधा पर किया जाता था। सबसे खास बात यह है कि यहां पर शिक्षा, रहना और खाना सभी नि:शुल्क था। इसमें भारत ही नहीं, बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, ईरान, ग्रीस, मंगोलिया जैसे देशों के भी छात्र भी पढ़ने के लिए आते थे। विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए ज्यादातर एशियाई देशों चीन, कोरिया और जापान से आने वाले बौद्ध भिक्षु होते थे। इतिहासकारों के अनुसार, सातवीं सदी में चीनी भिक्षु ह्वेनसांग ने भी यहां से शिक्षा ग्रहण की थी। ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तकों में नालंदा विश्वविद्यालय की भव्यता के बारे में लिखा है। इस विश्वविद्यालय में धार्मिक ग्रंथ, (लिट्रेचर, थियोलॉजी, लॉजिक, मेडिसिन, फिलोसॉफी, एस्ट्रोनॉमी) जैसे कई विषयों की पढ़ाई होती थी। उस समय जिन विषयों की पढ़ाई यहां पर होती थी, कहीं भी नहीं पढ़ाए जाते थे।

खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को जला दिया

नालंदा विश्वविद्यालय में 1193 तक पढ़ाई होती थी। 12वीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी ने इसे जला दिया था। तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इस पर हमला कर दिया। उसने पूरे विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया। इतिहासकारों के अनुसार, खिलजी ने जिस समय विश्वविद्यालय पर हमला किया था, उस समय इसकी नौ मंजिला लाइब्रेरी में करीब 90 लाख किताबें और पांडुलिपियां थीं। लाइब्रेरी में आग लगाने के बाद यह तीन महीने तक जलती रही। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के नालंदा जिले के राजगीर स्थित अंतर्राष्ट्रीय नालंदा यूनिवर्सिटी के नए परिसर का उद्घाटन किया। नालंदा पहुंचने के बाद पीएम मोदी ने सबसे पहले प्राचीन नालंदा यूनिवर्सिटी का भग्नावशेष देखा और उसके इतिहास की पूरी जानकारी ली। ◆◆◆

पुस्तक समीक्षा :

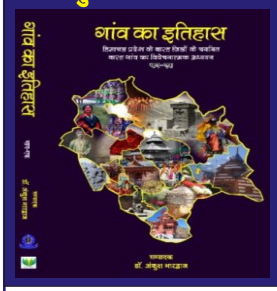

गांव का इतिहास

संपादक प्रो. अंकुश भारद्वाज
प्रकाशक:
शोध संस्थान नेरी हमीरपुर
मूल्य - भाग-1 : 800 रूपए
भाग-2 : 800 रूपए

गेयटी थिएटर में हिमाचल प्रदेश के 'गांव का इतिहास' पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ।
हिमाचल के इतिहास, संस्कृति को सहेजने में जुटा शोध संस्थान।
आक्रांताओं को महान बताना भारतीय इतिहास के साथ खिलवाड़।
गांव के इतिहास के बिना अधूरा है भारत का इतिहास।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में कार्यरत प्रोफेसर अंकुश भारद्वाज द्वारा संपादित 'गांव का इतिहास' के प्रत्येक खंड में छह गांवों का इतिहास, लोक संस्कृति, जनजीवन, मेले, पर्व, त्यौहार इत्यादि विभिन्न विषयों का प्रामाणिक वर्णन है। गांव का इतिहास पुस्तक के दोनों खंडों में साहली (चंबा) गूंधला (लाहुल) रिब्बा (किन्नौर), चरखड़ी (मंडी) पंजगाई (बिलासपुर) डोहगी (ऊना) झकांडो (सिरमौर) जौणाजी (सोलन) बटेवडी (शिमला) नेरटी (कांगडा) नग्गर (कुल्लू) आदि 12 गांव का इतिहास शामिल है। ये शोधपूर्ण आलेख विद्वान लेखक डॉ ओम प्रकाश शर्मा, डॉ विवेक शर्मा, डॉ रोशनी देवी, राजेंद्र शर्मा, डॉ सूरत ठाकुर, महेंद्र सिंह, मेहर चंद, दामोदर, बरूराम ठाकुर, डॉ ओम दत्त सरोच, राजेश्वर कारयप्पा तथा डॉ. शिव भारद्वाज द्वारा प्रामाणिक साक्ष्यों के आधार पर लिखे गए हैं। इस दृष्टि से एक ही आलेख में इतिहास और लोक संस्कृति की जानकारी पुस्तक की विशेषता है। गांव का इतिहास भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। गांव के इतिहास का लेखन वहीं के स्थानीय विद्वान लेखकों द्वारा किया जाना चाहिए, इस दृष्टि से 12 चयनित गांव के इतिहास लेखन के लिए स्थानीय विद्वान लेखकों को चुना गया है, जो वहां की संस्कृति, इतिहास, परंपराओं और लोक जीवन को अच्छी तरह से जानते हैं तभी इसकी प्रामाणिकता संभव है। ठाकुर राम सिंह इतिहास शोध संस्थान देरी हमीरपुर द्वारा डा. ओम प्रकाश द्वारा संपादित हिमाचल प्रदेश की लोक गाथाओं में इतिहास प्रसंग डॉ कर्म सिंह एवं बारू राम ठाकुर द्वारा संपादित हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर और डॉ कृष्ण मोहन पांडेय द्वारा संपादित पश्चिमी हिमालय में ऋषि परंपरा तथा डॉ अंकुश भारद्वाज द्वारा संपादित दो पुस्तकें हिमाचल प्रदेश के गांव का इतिहास प्रकाशित की गई हैं।◆◆◆

वर्षा से अल्टरनेरिया लीव ब्लाइट की चपेट में सेब बगीचे

मॉनसून की दस्तक के साथ शिमला जिला में लगातार वर्षा के कारण सेब के बगीचों में इस बार भी असामयिक पतझड़ का खतरा बना हुआ है। जिला में कई बगीचों में अल्टरनेरिया लीव ब्लाइट और असामयिक पतझड़ यानी समय से पहले पत्तों के झडने की समस्या देखी गई है। बागवानी विभाग व औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी ने बागवानों को अलर्ट किया है। बागवानों को इन बीमारियों पर रोकथाम पाने के लिए विभाग की ओर से जारी छिडक़ाव सारणी के अनुसार फफूंदनाशक का छिडक़ाव करने की सलाह दी गई है।

वरिष्ठ पौध संरक्षण अधिकारी डा. कीर्ति कुमार सिन्हा ने बताया कि लगातार वर्षा होने से इस बार भी अन्य बगीचों में यह समस्या पैदा हो सकती है। इसके अलावा हवा में ज्यादा नमी के कारण स्कैब रोग की आशंका भी है। जिन बगीचों में पिछले वर्ष स्कैब रोग देखा गया था, उनमें इस बार भी यह रोग फैल सकता है। हालांकि वूली एफिड व पाउडरी मिल्डयू जैसे रोगों पर वर्षा के कारण स्वत-ही नियंत्रण हो जाएगा लेकिन स्कैब व असामयिक पतझड़ से बगीचों को बचाने की आवश्यकता है। इसके लिए बागवानों को समय-समय पर उचित कदम उठाने होंगे।

सूखी पत्तियों पर ही करें फफूंदनाशक का छिडक़ाव

डा. सिन्हा का कहना है कि बगीचों को असामयिक पतझड़ व स्कैब से बचाने के लिए समय-समय पर फफूंदनाशक का छिडक़ाव करना ज़रूरी है। बागवानों को हर 20 दिन के बाद बगीचों में फफूंदनाशक का छिडक़ाव करने की आवश्यकता है। फफूंदनाशक का छिडक़ाव करते समय बागवानों को इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि पौधे में पत्तियां सूखी हों। ऐसा होने पर ही फफूंदनाशक असरदार साबित होगा। गीली पत्तियों पर छिडक़ाव करने से फायदा नहीं मिलेगा। जिस दिन मौसम साफ हो, बागवान उस दिन छिडक़ाव कर सकते हैं। हवा में ज़्यादा नमी के कारण स्कैब व अन्य बीमारियों का संक्रमण फैलता है। इसके लिए बागवानों को बगीचों में रोशनी की उचित व्यवस्था करनी होगी। इसके लिए बागवान सेब के पौधों से अनावश्यक पत्तियों को हटा सकते हैं। साथ ही बगीचे में उगी अनावश्यक घास को हटाना भी ज़रूरी है।◆◆◆

मोटे अनाज के प्रचार-प्रसार में हिमाचल अव्वल

हिमाचल प्रदेश के कृषि विभाग को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स (मोटा अनाज) वर्ष 2023 के दौरान मिलेट्स के प्रचार-प्रसार में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशंसापत्र से सम्मानित किया गया है। कृषि विभाग को भारत सरकार के कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रशंसापत्र से सम्मानित किया गया है। हिमाचल में कृषि क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। कृषि विभाग ने मिलेट्स को बढ़ावा देने के लिए अनेक नवोन्मेषी कदम उठा रहा हैं। यह उपलब्धि भी कृषि विभाग की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है। मिलेट्स के पोषक तत्वों और स्वास्थ्य को होने वाले लाभों के बारे में लोगों को जागरूक करने के साथ-साथ राज्य में बड़े स्तर पर मिलेट्स की पैदावार करने को प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है। कृषि विभाग ने वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष के रूप में नामित किया गया था, ताकि मिलेट्स से मिलने वाले पोषण, स्वास्थ्य, पर्यावरणीय स्थिरता और आर्थिक विकास इत्यादि लाभों से लोगों को अवगत करवाया जा सके। वैश्विक खाद्य प्रणाली भूख, कुपोषण, बढ़ती जनसंख्या, सीमित प्राकृतिक संसाधन और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है।

इन चुनौतियों का समाधान मिलेट्स के रूप में हो सकता है, जो विविध पोषक तत्त्वों से भरपूर है और न्यूनतम संसाधनों के साथ विभिन्न प्रतिकूल जलवायु में उगाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि इस पहल के महत्त्व को समझते हुए हिमाचल प्रदेश के कृषि विभाग ने राज्य भर में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया, ताकि किसानों में मिलेट्स की खेती के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके। वहीं कृषि मंत्री प्रो. चंद्र कुमार ने मिलेट्स की खेती के प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए किसानों के समर्पण की सराहना की। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी प्रदेश सरकार मिलेट्स को बढ़ावा देने के लिए योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित करेगी। वहीं कृषि सचिव सी पॉलरासु और कृषि निदेशक कुमद सिंह ने किसानों से इस प्रयास को निरंतर जारी रखने और बाजरा, रागी, कोदो मिलेट, कंगनी, रागी, मंडुआ, सांवां पर विशेष ध्यान देते हुए मिलेट्स उत्पादन को बढ़ाने का आग्रह किया।◆◆◆

हिंदू को फिर जगना होगा

हिंसा छोड़ी, सब कुछ छूटा
नफरत छोड़ी, देश लुटाया
क्षमादान कर दुश्मन पाले
हारे हुए को सिकंदर बनाया
खोया गौरव फिर पाना होगा
हिंदू को फिर जगना होगा।।
बहुत सो लिए, जागना होगा
जातिवाद से लड़ना होगा
राजनीति को समझ बूझकर
एक समाज बनाना होगा
चक्रव्यूह को तोड़ना होगा
हिंदू को फिर जगना होगा।
सभी तरह के भेदभाव को
आपस में सुलझाना होगा
उनका काम सबको लड़वाना
इस नीति को तोड़ना होगा
बहुत सह लिया अब न सहेंगे
हिंदू को धर्म पर चलना होगा।
पिछली बातें भूल भी जाएं
अब की शरारत भी कम है क्या!
उनको पता है एक नहीं तुम
जाति, भाषा में उलझे हो
हिंदू राष्ट्र बनाना है तो
हिंदू को शिवाजी बनना होगा।।
वेद, पुराण की सीख यही है
गीता उपनिषद की रीत यही है
राम कृष्ण की नीति यही है
अस्त्र-शस्त्र उठाना होगा
रण में जीत सुनिश्चित होगी
हिंदू को फिर लड़ना होगा

डॉ. कर्म सिंह

कारगिल विजय दिवस

हिमगिरि के उन्नत शिखरों पर
छिपकर बैठा था शत्रु,रहा ललकार, मौत को देकर अपनी !
दुर्गम पर्वत हिम आच्छादित जम उठें शिराएं!
हिमदेश के सिंह बेखबर स्यारों की कायरता से,
घोंपकर पीठ में छुराकपट से धोखे से,
चढ़ बैठे थे,सिंहों के हिमगिरि
कानन में !सेना अवाक!
हैरान सभी !किस गफलत में थे हम शेर के मस्तक पर आ गड़ी
श्वान की गिद्ध दृष्टि! गीदड़ भभकी..!!
सामने शत्रु तन खड़ा हुआ था..
और....क्रोधांध शेर हुँकार उठे..!!
रच गए व्यूह,रणनीति देश की सेना की गढ़कर अभेद्य,
समझे अजेय कायर जिसको, वह विजय हार ले
वरण हेतु आ गई भारती के वीरों के स्वागत में..!
जब छिड़ी जंग...
हिम श्वेत भाल पर तिलक चढ़ा,
निज शौर्यवीर गाथाओं का रक्तिम केसर-
सा लहू वीर रणधीरों का
बिखरा कुमकुम...रणचंडी का खप्पर दहका..
कट कटारुंड और मुंड
शत्रु के बिखरे कंदुक के समान,
कायरता सहम उठी,भागे वह रंगे स्यार
भागे सिर पर धर पाँव...,भागे-दहलाए
शत्रु काँप थर-थर-थर-थर...
कि पराजय शर्मनाक!!
भागे उनके रणनीतिकार भत्राहिमाम...!
ऑपरेशन विजय ' विजय गाथा
भारत माँ के रणधीरों की,
करगिल की चोटी पर फहराया विजय तिरंगा गर्व पूर्ण!!
गौरव गाथाएँगूँज उठींक्षनिज प्राणों की
आहुति देकर जो चले गए...
दे विजय माल में शीशदान..!
वीरों का वंदन! अभिनंदन!
है कोटि कोटि! उन्नत मस्तक
भारत माता का दीप्त हुआ
जिनके गौरव बलिदानों से!!
बधाई भारत के जन गण मन को!!

डॉ. रमा वीरेश सिंह, गुना

कांगड़ा चाय से होगा मधुमेह और बीपी पर नियंत्रण और सेब से बने कोंबुचा

नौणी विवि के वैज्ञानिकों ने किया सफल शोध

वानिकी एवं बागवानी विश्वविद्यालय नौणी (सोलन) ने कांगड़ा चाय, सेब और मशरूम से कोंबुचा तैयार किया है। कोंबुचा औषधीय गुणों से भरपूर होगा। यह पेट, मधुमेह, बीपी समेत गठिया दर्द को नियंत्रित करेगा। कोंबुचा के नियमित सेवन से पेट के स्वास्थ्य और पाचन में लाभ होगा। वहीं, इससे प्रतिरक्षा प्रणाली को तो बढ़ावा मिलेगा ही, बल्कि एंटी डायबिटिक, एंटी हाइपरटेंसिव और रोगाणुरोधी गुण मिलेंगे। नौणी विवि ने इस पर सफल शोध किया है, जिससे जल्द बाजार में उतारने की भी तैयारी है। वैज्ञानिकों ने एपल मिंट और औषधीय गुणों से भरपूर गैनोडर्मा मशरूम से भी कोंबुचा तैयार है।

नौणी विवि ने पहली बार चार नए कोंबुचा वेरिएंट बनाने की तकनीक विकसित की है। फल विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश शर्मा ने एमएससी छात्र अरुण कुमार के साथ मिलकर कोंबुचा किस्मों को तैयार किया है। इसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध ताजा कांगड़ा चाय की पत्तियों और अन्य कृषि उत्पादों का उपयोग किया है। कोंबुचा एक ताजा और बहुत कम अल्कोहल वाला पेय है, जो मीठी काली या हरी चाय, बैक्टीरियल, यीस्ट के कल्चर के मिश्रण से बना है। इसमें अवशिष्ट कार्बन डाइऑक्साइड के साथ थोड़ा मीठा और अम्लीय स्वाद होता है। परंपरागत रूप से कोंबुचा 5 से 15 प्रतिशत चीनीयुक्त चाय से बनाया जाता है, जिसे 22 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान पर एरोबिक परिस्थितियों में 7 से 10 दिनों के लिए मिश्रित किया जाता है। ◆◆◆

इस मौसम में भोजन में हल्दी, तुलसी और अदरक लाभप्रद

बदलते मौसम का सबसे ज्यादा असर बच्चों और बुजुर्गों पर पड़ता है, इसलिए जरूरी है उनका खास ख्याल रखना। इस मौसम में आप कपड़ों को पहनने से पहले इस्त्री करें। ऐसा करने से कपड़ों पर लगे कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। साथ ही ज्यादा ठंडे खाद्य पदार्थों के सेवन से बचें, बाहर का खाना खाने से परहेज करें, तरल पदार्थों का अधिक सेवन करें। इम्यूनिटी को मजबूत बनाने पर ध्यान दें। बरसात के मौसम में आप भोजन में हल्दी, तुलसी और अदरक का उपयोग करें। ये एंटीबायोटिक का कार्य करते हैं और इम्यून सिस्टम को दुरुस्त रखते हैं। बाहर जाते समय मास्क अवश्य लगाएं और दिन में दो बार गुनगुने पानी में नमक डालकर कुल्ला अवश्य करें। ऐसा करने से आपकी हेल्थ अच्छी बनी रहती है, जिससे संक्रमण होने का खतरा कम हो जाता है।

डॉ. अविनाश कुमार,
सीनियर फिजिशियन दीपचंद बंधु अस्पताल, दिल्ली

Dr. Hem Raj Sharma
ANO- Rectal Surgeon (Kshar Sutra)
(Piles, Fistula, Fissure, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Chikitsak Guru RAV
National Academy of Ayrveda New Dehli under Ministry of Ayush,Govt of India
Formerly Incharge Medical Officer DAH Una, Govt of Himachal Pradesh
Director
JAGAT HOSPITAL & KSHAR SUTER CENTER
Near Govt College Una HP
Mob.: 94184-88660, 88940-68358, 94593-88323
Email: drhemrajsharma55@gmail.com

हिमालयी क्षेत्र में कम हो रहा है बर्फ अधीन क्षेत्र

हिमालय में चिनाब, रावी, ब्यास और सतलुज नदी घाटियों में बर्फ के आवरण में 2023-24 के दौरान औसतन 12.72 प्रतिशत की गिरावट आई है, जबकि पिछली सर्दियों के दौरान 14.05 प्रतिशत की गिरावट आई थी।

सर्दियों में बर्फ के आवरण में गिरावट आई है, लेकिन यह 2022-23 की सर्दियों की तुलना में अपेक्षाकृत कम थी। हालांकि, रावी बेसिन ने 2023-24 के दौरान बर्फ के नीचे के क्षेत्र में मामूली वृद्धि दिखाई है। यह निष्कर्ष हिमाचल प्रदेश विज्ञान प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद (हिमकोस्टे) के तत्वावधान में जलवायु परिवर्तन पर राज्य केंद्र द्वारा किए गए उपग्रह इमेजरी अध्ययनों पर आधारित हैं। बर्फ के रूप में सर्दियों में होने वाली वर्षा का आकलन करने के लिए किए गए अध्ययनों के अनुसार, इस सर्दियों में चिनाब बेसिन में 15.39 प्रतिशत की अधिकतम गिरावट देखी गई, इसके बाद सतलुज बेसिन में 12.45 प्रतिशत, रावी बेसिन में 9.89 प्रतिशत और ब्यास बेसिन में 7.65 प्रतिशत की गिरावट देखी गई।

चिंताजनक बात यह है कि जनवरी में बर्फ के आवरण में सबसे अधिक गिरावट आई है। पिछले वर्ष की सर्दियों की तुलना में सतलुज बेसिन में 67 प्रतिशत, रावी बेसिन में 64 प्रतिशत, ब्यास बेसिन में 43 प्रतिशत और चिनाब बेसिन में 42 प्रतिशत की गिरावट आई। फरवरी और मार्च में बर्फ के आवरण ने सभी बेसिनों में सकारात्मक रुझान दिखाया। हिमाचल के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग एक तिहाई हिस्सा सर्दियों के मौसम में मोटी बर्फ की चादर के नीचे रहता है और हिमालय से निकलने वाली चिनाब, ब्यास, पार्वती, बसपा, स्पीति, रावी, सतलुज और इसकी बारहमासी सहायक नदियाँ जैसी प्रमुख नदियाँ अपने निर्वहन की निर्भरता के लिए मौसमी बर्फ कवर पर निर्भर करती हैं। पर्यावरण निदेशक डीसी राणा ने कहा, स्थानिक वितरण के संदर्भ में मौसमी बर्फ कवर का मानचित्रण अक्टूबर से अप्रैल तक सर्दियों के मौसम में हिमाचल प्रदेश में विभिन्न नदी घाटियों को कवर करता है। नदी घाटियों के जल विज्ञान को बनाए रखने के लिए विभिन्न जलग्रहण क्षेत्रों में बर्फ के योगदान को समझने के लिए यह एक महत्वपूर्ण इनपुट है। अक्टूबर 2023 और अप्रैल 2024 के बीच चंद्रा, भागा, मियार, ब्यास, पार्वती, जीवा, पिन, स्पीति और बसपा सहित सभी घाटियों में सर्दियों की वर्षा का मानचित्रण किया गया। यह भी देखा गया कि दिसंबर से फरवरी के चरम सर्दियों के महीनों के दौरान, सतलुज बेसिन को छोड़कर सभी घाटियों में गिरावट का रुझान दिखा, जिसमें 2 प्रतिशत सकारात्मक रुझान दिखा। ◆◆◆

पर्यावरण संरक्षण में सिरमौर की किंकरी देवी का योगदान

हिमाचल प्रदेश की बेटियां विभिन्न क्षेत्रों में कामयाब हैं। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, राजनीति का, फिल्म और कला का, विज्ञान का या कारोबार का। महिलाओं का विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें एक प्रसिद्ध नाम है सिरमौर की किंकरी देवी जिन्होंने पर्यावरण के क्षेत्र में आदर्श स्थापित किया।

किंकरी देवी ऐसा नाम है जिन्होंने पर्यावरण बचाने को लेकर ऐसा संघर्ष किया कि पूरी दुनिया में उनके नाम की चर्चा हुई। सिरमौर के दूर-दराज इलाके में घांटो संगड़ाह में जन्मीं किंकरी देवी ने गिरिपार इलाके में अवैध और अवैज्ञानिक तरीके से हो रहे खनन के खिलाफ आवाज उठाई थी। 1940 को जन्मीं किंकरी देवी ने विरोध प्रदर्शन, भूख हड़ताल, ज्ञापन भेजकर लोगों को जागरूक किया कि ये जो अवैध ढंग से खदानों में खनन किया जा रहा है, यह ठीक नहीं है। ऐसा भी कहा जाता है कि पैसे कम थे तो उन्होंने संघर्ष का खर्च निकालने के लिए मंगलसूत्र तक बेच दिया था।

80 के दशक के बीच में उन्होंने महिलाओं को एकजुट किया और अन्य संगठनों को साथ लेकर एक व्यापक अभियान छेड़ा था। उन्होंने ग्रामीणों को पढ़ाई-लिखाई और खासकर लड़कियों को भी स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित किया था। उन्होंने खनन माफिया के खिलाफ सरकारों को कार्रवाई करने के लिए कहा। सरकारें तो ढीली रहीं मगर 1987 में दायर एक जनहित याचिका पर 1991 में फैसला आया और 50 से ज्यादा खदानें बंद हो गईं।

आज हिमाचल की नई पीढ़ियां भले ही किंकरी देवी के बारे में न जानती हों मगर पूरी दुनिया ने उनको सराहा है। 2001 में भारत सरकार ने उन्हें स्त्री शक्ति नैशनल अवॉर्ड दिया था। मगर उससे पहले 1998 में चीन की राजधानी बीजिंग में हुए महिला सम्मेलन का शुभारंभ किंकरी देवी से ही करवाया गया था। 30 दिसंबर 2007 को बीमारी के बाद किंकरी देवी का निधन हो गया था मगर हिमाचल की नई पीढ़ियों पर हमेशा उनकी कर्जदारी रहेंगी।

वर्तमान में वृक्षारोपण के लिए एक पेड़ मां के नाम का नारा दिया जा रहा है और बरसात के मौसम में पर्यावरणप्रेमी लोगों द्वारा असंख्य पौधे लगाये भी जा रहे हैं। यदि सभी लोग इस कार्य को प्राथमिकता के आधार पर करें तो पर्यावरण के संरक्षण के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। ◆◆◆

हंसकर मृत्यु को अपनाने वाले अधीश जी

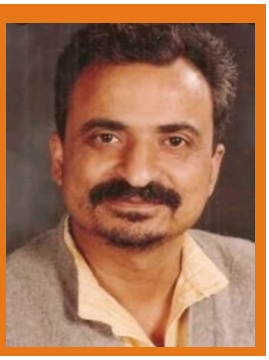

किसी ने लिखा है – तेरे मन कुछ और है, दाता के कुछ और! संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री अधीश जी के साथ भी ऐसा ही हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए उन्होंने जीवन अर्पण किया; पर विधाता ने 52 वर्ष की अल्पायु में ही उन्हें अपने पास बुला लिया।

अधीश जी का जन्म 17 अगस्त, 1955 को आगरा के एक अध्यापक श्री जगदीश भटनागर एवं श्रीमती उषादेवी के घर में हुआ। बालपन से ही उन्हें पढने और भाषण देने का शौक था। 1968 में विद्या भारती द्वारा संचालित एक इण्टर कालेज के प्राचार्य श्री लज्जाराम तोमर ने उन्हें स्वयंसेवक बनाया। धीरे-धीरे संघ के प्रति प्रेम बढ़ता गया और बी.एस-सी, एल.एल.बी करने के बाद 1973 में उन्होंने संघ कार्य हेतु घर छोड़ दिया।

अधीश जी ने सर्वोदय के सम्पर्क में आकर खादी पहनने का व्रत लिया और उसे आजीवन निभाया। 1975 में आपातकाल लगने पर वे जेल गये और भीषण अत्याचार सहे। आपातकाल के बाद उन्हें विद्यार्थी परिषद में और 1981 में संघ कार्य हेतु मेरठ भेजा गया। मेरठ महानगर, सहारनपुर जिला, विभाग, मेरठ प्रान्त बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख आदि दायित्वों के बाद उन्हें 1996 में लखनऊ भेजकर उत्तर प्रदेश के प्रचार प्रमुख का काम दिया गया।

प्रचार प्रमुख के नाते उन्होंने लखनऊ के विश्व संवाद केन्द्र के काम में नये आयाम जोड़े। अत्यधिक परिश्रमी, मिलनसार और वक्तृत्व कला के धनी अधीश जी से जो भी एक बार मिलता, वह उनका होकर रह जाता। इस बहुमुखी प्रतिभा को देखकर संघ नेतृत्व ने उन्हें अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख और फिर प्रचार प्रमुख का काम दिया। अब पूरे देश में उनका प्रवास होने लगा।

अधीश जी अपने शरीर के प्रति प्रायः उदासीन रहते थे। दिन भर में अनेक लोग उनसे मिलने आते थे, अतः बार-बार चाय पीनी पड़ती थी। इससे उन्हें कभी-कभी शौचमार्ग से रक्त आने लगा। उन्होंने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जब यह बहुत बढ़ गया, तो दिल्ली में इसकी जाँच करायी गयी। चिकित्सकों ने बताया कि यह कैंसर है और काफी बढ़ गया है।

यह जानकारी मिलते ही सब चिन्तित हो गये। अंग्रेजी, पंचगव्य और योग चिकित्सा जैसे उपायों का सहारा लिया गया; पर रोग बढ़ता ही गया। मार्च 2007 में दिल्ली में जब फिर जाँच हुई, तो चिकित्सकों ने अन्तिम घण्टी बजा दी। उन्होंने साफ कह दिया कि अब दो-तीन महीने से अधिक का जीवन शेष नहीं है। अधीश जी ने इसे हँसकर सुना और स्वीकार कर लिया।

इसके बाद उन्होंने एक विरक्त योगी की भाँति अपने मन को शरीर से अलग कर लिया। अब उन्हें जो कष्ट होता, वे कहते यह शरीर को है, मुझे नहीं। कोई पूछता कैसा दर्द है, तो कहते, बहुत मजे का है। इस प्रकार वे हँसते-हँसते हर दिन मृत्यु की ओर बढ़ते रहे। जून के अन्तिम सप्ताह में ठोस पदार्थ और फिर तरल पदार्थ भी बन्द हो गये।

चार जुलाई, 2007 को वे बेहोश हो गये। इससे पूर्व उन्होंने अपना सब सामान दिल्ली संघ कार्यालय में कार्यकर्त्ताओं को दे दिया। बेहोशी में भी वे संघ की ही बात बोल रहे थे। घर के सब लोग वहाँ उपस्थित थे। उनका कष्ट देखकर पाँच जुलाई शाम को माता जी ने उनके सिर पर हाथ रखकर कहा – बेटा अधीश, निश्चिन्त होकर जाओ। जल्दी आना और बाकी बचा संघ का काम करना। इसके कुछ देर बाद ही अधीश जी ने देह त्याग दी।◆◆◆

सक्रियता और जागरूकता के लिए जाने जाते थे जिला साहित्य प्रमुख यशपाल

हृदयविदारक समाचार है कि जिला साहित्य प्रमुख नालागढ़, श्रीमान यशपाल जी अब हमारे बीच नहीं रहे। यह दुखद घटना उस समय घटित हुई जब वे अपने घर चम्बा सलूणी लौट रहे थे। बताया जा रहा है कि नालागढ़ से घर जाते समय नकडोह ऊना के पास उनकी बाइक हादसे का शिकार हो गई, जिसमें उन्होंने अपनी जान गंवा दी। श्री यशपाल जी साहित्यिक और सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रियता और योगदान के लिए जाने जाते थे। उन्होंने न केवल साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया, बल्कि समाज को जागरूक करने और उसकी प्रगति के लिए भी काम किया। उनकी लेखनी में समाज की समस्याओं का प्रतिबिंब और समाधान की दिशा में मार्गदर्शन साफ देखा जा सकता था। उनके असमय निधन से साहित्य और समाजिक क्षेत्र को अपूरणीय क्षति हुई है।

यूक्रेन की मारिया बनी कर्णेश्वरी अपनाया सनातन धर्म

नाम है मारिया। रहने वाली है यूक्रेन की, जिसका रूस के साथ युद्ध चल रहा है। मारिया, भारत में आयुर्वेद पर रिसर्च करने के लिये यहाँ आई थी, यहाँ भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के बारे में जाना। कई साल तक सनातन धर्म और आयुर्वेद में शोध करने के बाद आखिरकार मारिया ने सनातन धर्म अपना लिया। रिपोर्ट के अनुसार मारिया ने हरियाणा के हलुवास गेट स्थित एक आश्रम में वैदिक विधि से हिन्दू धर्म अपना लिया। इसी के साथ मारिया ने अपना नाम बदलकर कर्णेश्वरी रख लिया। महामंडलेश्वर संगम गिरी महाराज बताते हैं कि सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए ब्रिटेन, यूक्रेन और जर्मनी समेत कई देशों में जाते रहते हैं। जहाँ उनके कई शिष्य बने हुए हैं। हिन्दू संत के अनुसार वर्ष 2026में मारिया युद्धग्रस्त यूक्रेन से आयुवेद पर शोध करने के लिये आती है। इसी शोध के दौरान उन्हें भारतीय संस्कृति और आयुर्वेद दोनों को जानने का मौका मिला। एक बेटा और बेटी की माँ कर्णेश्वरी ने आखिरकार सनातन धर्म अपना लिया।◆◆◆

ऊना की ड्यू खेर ने उत्तरी अमेरिकी पुरस्कार जीता

ऊना की ड्यू खेर को कंसल्टिंग मैगजीन-2023 के लिए टेक कंसल्टिंग में महिला लीडर नामित किया गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका में पुरस्कार समारोह में कंसल्टिंग में शीर्ष नेताओं की उपलब्धियों का जश्न मनाया गया। इसमें ड्यू को कंसल्टिंग पेशेवरों के एक प्रतिष्ठित समूह के बीच जगह मिली। टेक्नोलॉजी कंसल्टिंग के क्षेत्र में ऊना की ड्यू खेर ने उपलब्धि हासिल की है। ड्यू दुबे खेर को कंसल्टिंग मैगजीन-2023 के लिए टेक कंसल्टिंग में महिला लीडर नामित किया गया है। घोषणा पत्रिका की वार्षिक विजेता सूची में की गई। यह बीसीजी, डेलोइट व अन्य सहित दुनिया की कुछ प्रमुख कंसल्टिंग फर्मों के उत्कृष्ट नेताओं को मान्यता देती है। स्थानीय निवासी ड्यू ने अपने अभिनव दृष्टिकोण व उत्कृष्टता के प्रति समर्पण के माध्यम से कंसल्टिंग उद्योग में एक शानदार प्रतिष्ठा बनाई है। संयुक्त राज्य अमेरिका में पुरस्कार समारोह में कंसल्टिंग में शीर्ष नेताओं की उपलब्धियों का जश्न मनाया गया। इसमें ड्यू को कंसल्टिंग पेशेवरों के एक प्रतिष्ठित समूह के बीच जगह मिली। प्रौद्योगिकी उन्नति को आगे बढ़ाने में उनके योगदान को महत्वपूर्ण बताया गया। ◆◆◆

ब्रिटेन में ईसाई सांसद ब्लैकमैन ने गीता के साथ ली शपथ

ब्रिटेन की संसद में भारतीय मूल की सांसद शिवानी राजा और ईसाई सांसद बॉब ब्लैकमैन ने भगवद् गीता पर हाथ रख कर सांसदी की शपथ ली। दोनों ऋषि सुनक की कंजर्वेटिव पार्टी से चुनाव जीते हैं। शिवानी ने लीस्टर ईस्ट सीट से जीत दर्ज की है। शिवानी ने लंदन के पूर्व डिप्टी मेयर राजेश अग्रवाल को 4 हजार से ज्यादा वोटों से हराया है। लीस्टर ईस्ट को लेबर पार्टी का गढ़ माना जाता है। शिवानी ने यहां 37 साल बाद कंजर्वेटिव पार्टी को जीत दिलाई है। शपथ लेने के बाद शिवानी ने एक पोस्ट कर बताया कि भगवद् गीता के साथ शपथ लेना उनके लिए सम्मान की बात थी। उन्हें इस पर गर्व है। शिवानी ब्रिटेन की सबसे यंग सांसदों में से एक है। वे अभी 27 साल की हैं। शिवानी के माता-पिता 1970 के दशक में गुजरात से लंदन गए थे। वे खुद को हिन्दू मानती है और हिन्दू रीति रिवाज को अपनाती हैं। वहीं बॉब ब्लैकमैन 2010 से सांसद हैरो ईस्ट से सांसद हैं। हॉरो ईस्ट के सांसद बॉब ब्लैकमैन का ऑफिशियल नाम रॉबर्ट जॉन ब्लैकमैन है। वे 2010 से यूके पार्लियामेंट के मेंबर हैं। उन्हें साल 2020 में पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया गया था। पद्मश्री भारत का चौथा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान है। यह विशिष्ट सेवा के लिए दिया जाता है। बॉब ब्लैकमैन के संसदीय क्षेत्र में भारतीय मूल की बड़ी आबादी रहती है। वह भारतीय समुदाय (विशेषकर हिंदू आबादी) के आयोजनों और मुद्दों के साथ निकटता से जुड़े हैं। ब्लैकमैन ने मोदी सरकार द्वारा कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाए जाने का समर्थन किया था।

ब्रिटेन में चुनाव जीत रहे भारतवंशी

ब्रिटेन में इस बार भारतीय मूल के 107 प्रत्याशियों ने चुनाव लड़ा था। जिसमें से 29 को जीत मिली थी। इसमें लेबर पार्टी के 19 और कंजरवेटिव पार्टी से 7 थे। इसके अलावा लिबरल डेमोक्रेट्स से ब्रिटिश-भारतीय मूल के 1 सांसद और 2 उम्मीदवारों ने निर्दलीय चुनाव जीता है। इससे पहले 2019 में हुए चुनावों में 15 भारतवंशी को जीत मिली थी और 2017 के चुनाव में 10 जीते थे।◆◆◆

कारगिल युद्ध में हिमाचल प्रदेश के वीर सपूतों की अविस्मरणीय भूमिका

... राजेश शर्मा

कारगिल युद्ध, जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है, 1999 में भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ा गया था। इस युद्ध की विशेषता उसकी कठिन परिस्थितियों और भारतीय सेना के अदम्य साहस में थी। विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश के वीर सपूतों का योगदान इस युद्ध में अत्यधिक महत्वपूर्ण था। हिमाचल प्रदेश, जिसे 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है, ने देश को ऐसे वीर जवान दिए जिन्होंने कारगिल की दुर्गम पहाड़ियों में अपने अदम्य साहस और आत्मसमर्पण का परिचय दिया।

कारगिल की ऊँचाई और ठंडी परिस्थितियाँ युद्ध के दौरान सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक थीं। यहां, भारतीय सेना के जवानों को न केवल दुश्मन के हमलों का सामना करना पड़ा, बल्कि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ा। हिमाचल प्रदेश के जवानों ने इन चुनौतियों को स्वीकार किया और कठिन परिस्थितियों में भी अपने कर्तव्य का बखूबी निर्वहन किया। उनकी बहादुरी और समर्पण ने युद्ध के परिणाम को प्रभावित किया और देश की सुरक्षा को सुनिश्चित किया।

कारगिल युद्ध में हिमाचल प्रदेश के वीर सपूतों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण और अमूल्य था। उनकी बहादुरी, समर्पण और बलिदान ने भारतीय सेना को कठिन परिस्थितियों में भी विजय दिलाई। इन वीर जवानों की कहानियां देश के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और उनके योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते। उनका साहस और बलिदान हमेशा हमारे दिलों में जीवित रहेगा।

इन वीर जवानों में कैप्टन विक्रम बत्रा का नाम विशेष रूप से प्रमुख है। पालमपुर के निवासी कैप्टन बत्रा ने अपनी बहादुरी और नेतृत्व के लिए परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। उनका साहसिक नारा 'ये दिल मांगे मोर' न केवल उनकी वीरता का प्रतीक था, बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बना। कैप्टन बत्रा की निष्ठा और समर्पण ने उन्हें भारतीय सेना का नायक बना दिया।

कैप्टन सौरभ कालिया, जो कांगड़ा जिले के निवासी थे, ने भी कारगिल युद्ध में अद्वितीय साहस का परिचय दिया। उनके साथियों के साथ वे दुश्मन के हाथों पकड़े गए और बाद में उनकी बर्बरता का शिकार बने। उनका बलिदान, उनकी वीरता और उनके आत्मसमर्पण की कहानी ने यह सिद्ध किया कि देश की सुरक्षा के लिए वे किसी भी स्थिति में डटे रहने को तैयार थे। उनका बलिदान आज भी हर भारतीय के दिल में गूंजता है और हमें अपने देश के प्रति जिम्मेदारी का एहसास कराता है। इसके अतिरिक्त, सुबेदार योगेंद्र यादव, जो शिमला जिले से थे, उन्होंने भी अपनी वीरता का प्रदर्शन किया। उन्हें भी परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। सुबेदार यादव की बहादुरी की कहानियां आज भी प्रेरणादायक हैं और भारतीय जवानों के साहस का प्रतीक हैं। उनकी वीरता ने यह साबित कर दिया है कि कठिन परिस्थितियों में भी, निष्ठा और संकल्प से किसी भी मुश्किल को पार किया जा सकता है।

हिमाचल प्रदेश के जवानों का कारगिल युद्ध में योगदान केवल शारीरिक लड़ाई तक सीमित नहीं था। उन्होंने मानसिक साहस, धैर्य और अनुशासन का भी परिचय दिया। इन वीर सपूतों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए देश की रक्षा की और यह सुनिश्चित किया कि भारतीय सेना हर परिस्थिति में सफल हो। उनके बलिदान और वीरता को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनके साहसिक कार्यों ने यह साबित कर दिया कि हिमाचल की भूमि केवल अपनी सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि वीरता और साहस के लिए भी जानी जाती है।

कारगिल युद्ध में हिमाचल प्रदेश के 52 वीर सपूतों का योगदान अमूल्य है। उनका साहस और बलिदान हमारे देश के युवाओं को हमेशा प्रेरित करता रहेगा। हिमाचल के इन वीर जवानों ने साबित कर दिया है कि देश की सेवा और सुरक्षा के लिए वे हमेशा तत्पर हैं। उनके योगदान को याद करते हुए हम सभी को गर्व महसूस होता है और हमें उनके जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है। उनके साहस, बलिदान और समर्पण की कहानियां हमेशा हमारे दिलों में जीवित रहेंगी और हम उन्हें कभी नहीं भूल पाएंगे। ◆◆◆

रामचरितमानस, पंचतंत्र और 'सहृदयालोक-लोकन' यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर धरोहर में शामिल

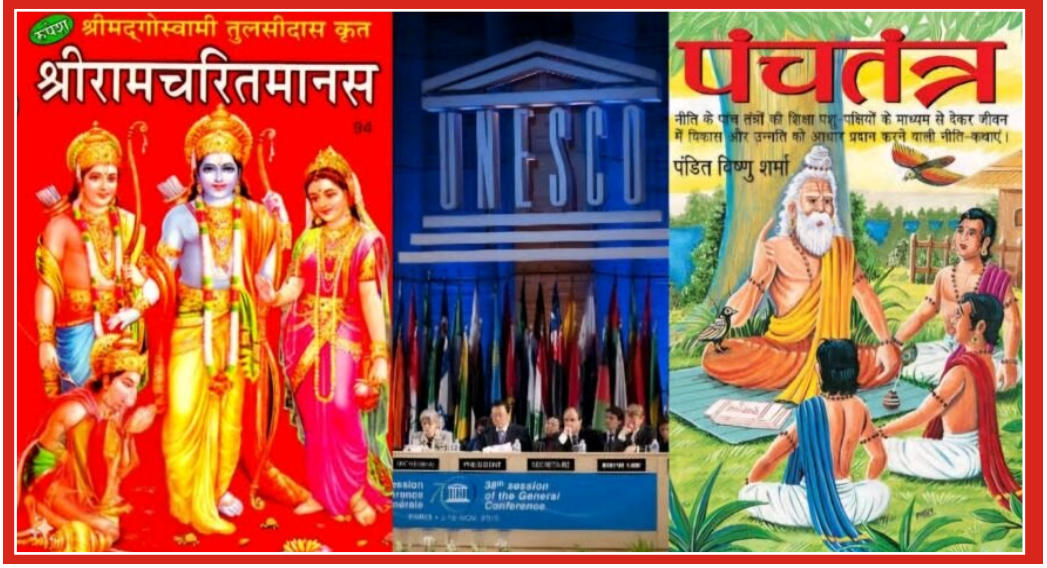

यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर मानवता की दस्तावेजी विरासत की सुरक्षा के लिए 1992 में यूनेस्को द्वारा शुरू की गई एक अंतरराष्ट्रीय पहल का हिस्सा है। राम चरित मानस, पंचतंत्र और सहृदयलोक-लोकन को 'यूनेस्को के मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड एशिया-पैसिफिक रीजनल रजिस्टर' में शामिल किया गया है। यह समावेशन भारत के लिए एक गौरव का क्षण है, जिससे देश की समृद्ध साहित्यिक विरासत और सांस्कृतिक विरासत की पुष्टि होती है। यह वैश्विक सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में हो रहे प्रयासों में एक कदम आगे बढने का प्रतीक है, जो हमारी साझा मानवता को आकार देने वाली विविध कथाओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों को पहचानने और सुरक्षित रखने के महत्व पर प्रकाश डालता है। इन साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियों का सम्मान करके, समाज न केवल उनके रचनाकारों की रचनात्मक प्रतिभा को श्रद्धांजलि देता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि उनका गहन ज्ञान और कालातीत शिक्षाएं भावी पीढियों को प्रेरित करती रहें और उनकी जानकारियां बढ़ाती रहें।

'रामचरितमानस', 'पंचतंत्र' और 'सहृदयालोक-लोकन' ऐसी कालजयी रचनाएं हैं जिन्होंने भारतीय साहित्य और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है, देश के नैतिक ताने-बाने और कलात्मक अभिव्यक्तियों को आकार दिया है। इन साहित्यिक कृतियों ने समय और स्थान से परे जाकर भारत के भीतर और बाहर दोनों जगह पाठकों और कलाकारों पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उल्लेखनीय है कि 'सहृदयालोक-लोकन', 'पंचतंत्र' और 'रामचरितमानस' की रचना क्रमश- पं. आचार्य आनंदवर्धन, विष्णु शर्मा और गोस्वामी तुलसीदास ने की थी।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) ने मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड कमेटी फॉर एशिया एंड द पैसिफिक (एमओडब्ल्यूसीएपी) की 10वीं बैठक के दौरान एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उलानबटार में हुई इस सभा में, सदस्य देशों के 38 प्रतिनिधि, 40 पर्यवेक्षकों और नामांकित व्यक्तियों के साथ एकत्र हुए। तीन भारतीय नामांकनों की वकालत करते हुए, आईजीएनसीए ने 'यूनेस्को की मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड एशिया-पैसिफिक रीजनल रजिस्टर' में उनका स्थान सुनिश्चित किया।

आईजीएनसीए में कला निधि प्रभाग के डीन (प्रशासन) और विभाग प्रमुख प्रोफेसर रमेश चंद्र गौड़ ने भारत से इन तीन प्रविष्टियों- राम चरित मानस, पंचतंत्र और सहृदयालोक-लोकन को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया। प्रो. गौर ने उलानबटार सम्मेलन में नामांकनों का प्रभावी ढंग से समर्थन किया। यह उपलब्धि भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए आईजीएनसीए के समर्पण को प्रदर्शित करती है, साथ ही, वैश्विक सांस्कृतिक संरक्षण और भारत की साहित्यिक विरासत की उन्नति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है। ऐसा पहली बार हुआ है जब आईजीएनसीए ने 2008 में अपनी स्थापना के बाद से क्षेत्रीय रजिस्टर में नामांकन जमा किया है।

गहन विचार-विमर्श से गुजरने और रजिस्टर उपसमिति (आरएससी) से सिफारिशें प्राप्त करने और बाद में सदस्य देशों के प्रतिनिधियों द्वारा मतदान के बाद, सभी तीन नामांकनों को शामिल किया गया, जिससे 2008 में रजिस्टर की स्थापना से पहले की महत्वपूर्ण भारतीय प्रविष्टियों को चिह्नित किया गया।◆◆◆

हिंदुत्व सौहार्द का परिचयात्मक है, हिंसा और नफरत का नहीं

अहिंसा परमो धर्मः, धर्म हिंसा तथैव च। – सुनील आंबेकर

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने हिंदुओं के संबंध में एक आपत्तिजनक बयान दिया कि हिंदू धर्म को मानने वाले 24 घंटे हिंसा हिंसा, नफरत नफरत करते हैं। इस बयान के साथ ही एक नया विवाद खड़ा हो गया। संसद में विपक्ष ने हिंदू सनातन धर्म को हिंसक होने की बात कही। सत्ता रूढ दल और एनडीए की ओर से हिंदुओं को अहिंसक और नफरत न करने वाला बताया जाता रहा। कांग्रेस सहित सभी विपक्षी दल हिंदू धर्म और संस्कृति का अपमान करते चले आ रहे हैं और राष्ट्रवादी विचार रखने वाले एनडीए के घटक दल सनातन हिंदू धर्म के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं।

इस बयान के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील अंबेडकर जी ने भी राहुल गांधी के बयान पर टिप्पणी करते हुए कहा कि हिंदुत्व सौहार्द का परिचायक है, नफरत का नहीं। संसद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हिंदू धर्म, संस्कृति की परंपरा का उल्लेख करते हुए हिंदुओं को सहिष्णु,सौहार्दपूर्ण व्यवहार करने वाला और सभी मनुष्यों तथा प्राणियों से नफरत न करने वाला बताया। टीवी चैनल और सोशल मीडिया पर भी इस विषय पर खूब बहस होती रही। वस्तुतः महात्मा गांधी अहिंसा का पाठ तो पढ़ाते रहे लेकिन भारत का विभाजन नहीं रोक पाए और पाकिस्तान का जन्म लाखों हिंदुओं की लाशों पर हुआ। ऐसा हिंसा का नंगा नाच इतिहास ने पहले कभी नहीं देखा। इसके बाद भी महात्मा गांधी एक गाल पर थप्पड़ खाने के बाद दूसरा गाल आगे करने की नसीहत देते रहे, परंतु हिंदुओं के इलावा अन्य मतावलंबियों को उनके द्वारा हिंसा किए जाने पर उन्हें कभी रोकने की बात नहीं की गई। अहिंसा और क्षमादान दो ऐसे शब्द हैं, जिन्होंने भारत के इतिहास में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। क्रूर,आतंकी, आक्रमणकारी विधर्मियों ने हमारे मंदिरों को लूटा और हम अहिंसक होकर बैठे रहे। शकों मुगलों आदि विदेशी आक्रमणकारियों ने तलवार की धार पर और अंग्रेजों ने बंदूक की नोक पर सैकड़ों वर्षों तक हम पर राज किया, हमें लूटते रहे परंतु हिंदू जन अहिंसा और क्षमा की दुहाई देते रहे। अन्याय, अत्याचार, अधर्म के विरुद्ध हथियार उठाने वाले भगवान श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण के अनुयायी होकर भी हम धर्म की रक्षा के लिए भी हिंसा करने से कतराते रहे, अहिंसक, सहिष्णु बने रहे। इसीलिए सदियों तक गुलाम रहे। कालांतर में आजादी के लिए भी सशस्त्र क्रांति को अपनाना पड़ा। अगर अहिंसा के मार्ग पर चले होते तो शायद आजादी अभी न मिलती। वर्तमान में भारतवर्ष में कट्टरपंथी ताकतें जिस तरह हिंसक प्रवृत्ति को अपनाकर लूटपाट, आगजनी, हत्या, बलात्कार की वारदातें हो रही हैं, क्या उनका मुकाबला अहिंसक प्रवृत्ति से किया जा सकेगा। क्या हिंदू भाईचारा निभाने की ज़िद में हमेशा चारा ही बनता रहेगा या बहुसंख्यक हिंदुओं को भी अपनी रक्षा के लिए, अपने धर्म और संस्कृति को बचाए रखने के लिए हिंसक प्रवृत्ति को धारण करना पड़ेगा।

महाभारत के आदि पर्व में धर्मराज युधिष्ठिर अहिंसा का महत्व समझाते हुए स्पष्ट कहते हैं-

अहिंसा परमो धर्मः, धर्म हिंसा तथैव च।
अहिंसा परमं धर्मं, हिंसा धर्मोऽपरं भवेत॥

अहिंसा परम धर्म है, और धर्म हिंसा भी परम धर्म है।अहिंसा परम धर्म है और हिंसा भी दूसरा परम धर्म है। यानी धर्म की रक्षा के लिए की जाने वाली हिंसा अधर्म नहीं कहलाती, आत्मरक्षा समाज और राष्ट्र की रक्षा के लिए की जाने वाली हिंसा भी परम धर्म कही गई है। अहिंसा ही सबसे श्रेष्ठ धर्म है, और हिंसा दूसरा धर्म होता है॥

अहिंसा ही सबसे महत्वपूर्ण और ऊँचा मानवीय गुण है। भारतीय साहित्य और योग दर्शन में अहिंसा को महत्वपूर्ण माना गया है। योग दर्शन अहिंसा का उपदेश देता है परंतु अहिंसा के साथ आत्मरक्षा धर्म रक्षा राष्ट्र की रक्षा के लिए हिंसा को भी अनिवार्य कहा गया है। धर्म युद्ध में शत्रु को मारना हिंसा नहीं, धर्म कहलाता है। अकेला अहिंसा का उपदेश हिंदुओं को धर्मभीरु बनाता है। इसलिए अहिंसा के साथ हिंसा के धर्म की भी सीख दी गई है। हिंदू और जैन मत में जीव हिंसा को धर्म कहा गया है। जबकि अन्य मतों में त्यौहार के नाम पर करोड़ों जीवों की हिंसा की जाती है। उस पर किसी को आपत्ति नहीं होती ! तब भी इंडी एलायंस की नफरत सिर्फ सनातन के विरोध में दिखाई देती है, अन्यों का विरोध करने की उनमें हिम्मत नहीं या वोट की राजनीति के चलते हुए पूरी तरह से कट्टरपंथी ताकतों के आगे नतमस्तक हुए दिखाई पड़ते हैं। यही इंडी एलायंस के कुछ घटक दलों की मानसिकता रही है जिसका प्रताकार किया जाना समय की जरूरत है।◆◆◆

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर 58 साल बाद हटाया गया प्रतिबंध

केंद्र सरकार का ऐतिहासिक फैसला

अब संघ के कार्यक्रमों में शामिल हो सकेंगे सरकारी कर्मचारी, अधिसूचना जारी

केंद्र सरकार ने 58 साल पुराने प्रतिबंध को हटा दिया है, जो सरकारी कर्मचारियों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की गतिविधियों में भाग लेने से रोकता था। यह प्रतिबंध 1966, 1970 और 1980 में जारी किए गए आदेशों के तहत लागू था। अब, सरकारी कर्मचारी आरएसएस के कार्यक्रमों में बिना किसी कानूनी अड़चन के शामिल हो सकेंगे।

आरएसएस की स्थापना 27 सितंबर 1925 को विजयदशमी के दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने की थी। यह संगठन अनुशासन और दैनिक शाखाओं के माध्यम से शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है। वर्तमान में आरएसएस की 60,000 से अधिक दैनिक शाखाएं हैं। यह संगठन अपने प्रखर राष्ट्रवाद और हिंदू समाज एवं संस्कृति के प्रति सेवा कार्यों के लिए जाना जाता है।

9 जुलाई 2024 को, 58 साल का प्रतिबंध हटा दिया गया। प्रतिबंध हटाने संबंधी सरकारी आदेश के सार्वजनिक होने के बाद आरएसएस प्रवक्ता सुनील आंबेकर ने एक बयान में कहा– ''सरकार का ताजा फैसला उचित है और यह भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करेगा।''

आरएसएस पर अब तक तीन बार प्रतिबंध लग चुका है। पहला प्रतिबंध महात्मा गांधी की हत्या के बाद 1948 में लगाया गया था। संघ पर आरोप था कि गांधीजी की हत्या का संबंध संघ से था, हालांकि बाद में जांच में ऐसा कुछ साबित नहीं हुआ। यह प्रतिबंध 18 महीने बाद 1949 में हटाया गया। दूसरा प्रतिबंध 1975 में इमरजेंसी के दौरान लगाया गया, जब संघ ने सरकार की नीतियों का विरोध किया था। यह प्रतिबंध इमरजेंसी हटने के बाद 1977 में खत्म हुआ। तीसरा प्रतिबंध 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद लगाया गया, जो 1993 में हटा दिया गया।

वर्तमान सरकार के इस फैसले का आरएसएस ने स्वागत किया है। संघ ने इसे लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए उचित बताया और कहा कि पूर्ववर्ती सरकारों ने अपने राजनीतिक हितों के कारण सरकारी कर्मचारियों को संघ की गतिविधियों में शामिल होने से रोका था। आरएसएस के प्रवक्ता सुनील आंबेकर ने बयान दिया कि सरकार का यह निर्णय लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करेगा।

हालांकि, इस फैसले पर विपक्ष ने आलोचना की है। विपक्षी नेताओं का कहना है कि यह कदम सरकारी तंत्र को राजनीतिक रंग देने का प्रयास है और इससे देश की लोकतांत्रिक संरचना प्रभावित हो सकती है। विपक्ष का मानना है कि संघ की विचारधारा और उसकी गतिविधियों से सरकारी कर्मचारियों को दूर रखना जरूरी है, ताकि सरकारी सेवाओं की निष्पक्षता बनी रहे। इस फैसले के बाद अब सरकारी कर्मचारी बिना किसी डर के आरएसएस के कार्यक्रमों में भाग ले सकते हैं। यह निर्णय भारतीय राजनीति और प्रशासनिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है, जिसका प्रभाव आने वाले समय में देखा जाएगा। ◆◆◆

आरएसएस ने किया फैसले का स्वागत

आरएसएस ने सरकारी कर्मचारियों के संघ की गतिविधियों में शामिल होने पर लगी रोक हटाने के केंद्र सरकार के फैसले का स्वागत किया। आरएसएस ने कहा कि फैसले से देश की लोकतांत्रिक प्रणाली मजबूत होगी। उसने पूर्ववर्ती सरकारों पर अपने राजनीतिक हितों के कारण सरकारी कर्मचारियों को संघ की गतिविधियों में हिस्सा लेने से प्रतिबंधित करने का आरोप भी लगाया।

विपक्ष ने सरकार के फैसले की आलोचना की

विपक्ष के कई नेताओं ने सरकारी कर्मचारियों पर संघ की गतिविधियों में हिस्सा लेने पर लगा प्रतिबंध हटाने के केंद्र के फैसले की आलोचना की है।

15 साल का वरुण विदेश से जीत लाया मेडल

हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला की बल्हघाटी के भड़याल गांव के 15 वर्षीय वरुण वालिया ने स्वात फ्रेंच बॉक्सिंग में ब्रांज मेडल जीतकर इतिहास रच दिया है। इंडोनेशिया में संपन्न हुई पांचवीं स्वात फ्रेंच बॉक्सिंग चैंपियनशिप के जूनियर 42 किलो भार वर्ग में वरुण ने यह मेडल हासिल किया है। वरुण 10वीं कक्षा का छात्र है और इसके पिता अमर चंद एचआरटीसी में कार्यरत हैं, जबकि माता नेहा वालिया गृहिणी है। वरुण के पिता भी इस खेल में तीन बार नेशनल खेल चुके हैं और एक बार गोल्ड मेडल भी जीत चुके हैं। वरुण की छोटी बहन भी इस खेल में सक्रिय है। बेटे की इस कामयाबी से घर में खुशी का माहौल देखने को मिल रहा है। ब्रांज मेडल जीतकर वापिस घर पहुंचे वरुण ने अपनी इस कामयाबी का श्रेय माता-पिता, स्वात एसोसिएशन और अपनी कोच संतोषी शर्मा को दिया और भविष्य में भारत के लिए गोल्ड मेडल जीतने की इच्छा जताई। पिता अमर चंद ने बताया कि बेटे ने कड़ी मेहनत से यह मुकाम हासिल किया है और उन्हें बेटे की इस कामयाबी पर नाज है।◆◆◆

वर्षा शर्मा हुनरबाज हिमाचल 2024 की विजेता

वर्षा शर्मा बिलासपुर की बेटी जो कि गाँव साई फरड़या से श्रवण कुमार ट्रक ड्राईवर की पुत्री हैं। हुनरबाज हिमाचल 2024 की विजेता और पहाड़ी फोक डांस 2024 की भी विजेता रही है। वर्षा शर्मा अपने हिमाचली संस्कृति के लिए कार्य कर रही हैं ताकि आने वाली पीढ़ी हमारी संस्कृति और रीति-रिवाजो से परिचित रहे। साथ ही यह स्कूल में कल्चर प्रोग्राम भी बच्चों को करवाती हैं, जो हमारी संस्कृति से जुड़े होते हैं। वर्षा शर्मा ने मॉडलिंग निखिल चौधरी से सीखी तथा मॉडलिंग में कई टाइटल भी जीते। बिलासपुर के उड़ान ग्रुप थिएटर के साथ 2 साल से कार्य कर रही हैं। जिसके डॉयरेक्टर अभिषेक डोगरा तथा नवीन सोनी अभिषेक सोनी है। उनकी उपलब्धियों में मिस बिलासपुर 2023, सर्वश्रेष्ठ टैलेंट शो 2023 विजेता, शान ए हिमाचल सीज़न 4 पब्लिक च्वाइस अवार्ड विजेता, मिस ग्लोरी ऑफ हिमालय 2023 विजेता, पहाड़ी उत्सव प्रथम उपविजेता 2023, कई शो में ज्यूरी मेंबर के तौर पर भी काम कर चुकी हैं।◆◆◆

सिरमौर की कृतिका ने उत्तीर्ण की यूपीएससी परीक्षा

जिला सिरमौर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छोगटाली से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने वाली कृतिका ने पहले ही प्रयास में देश की सर्वोच्च प्रतियोगी परीक्षा संचालक संस्था यू पी एस सी की प्रारंभिक परीक्षा बिना किसी कोचिंग के उत्तीर्ण की। घोषित हुए परीक्षा परिणाम के तुरंत बाद कृतिका अपने पुराने विद्यालय छोगटाली पहुंची। वहां अपने विद्यालय के शिक्षकों तथा मुख्य रूप से अपने समय के गणित शिक्षक सुरेश ठाकुर का आभार व्यक्त किया। शिक्षक सुरेश ठाकुर तथा रामलाल ठाकुर ने भी कृतिका की सफलता पर अत्यधिक प्रसन्नता अभिव्यक्त की। राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ से स्नातक की उपाधि पाने वाली कृतिका ने राजनीति शास्त्र तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध विषय को अपनी मुख्य परीक्षा के लिय चुना है तथा वह अपनी सफलता का अत्यधिक श्रेय राजगढ़ महाविद्यालय के तत्कालीन प्राचार्य सुरेंद्र कुमार गांधी तथा प्रोफेसर अमिता मेहता को देती है। कार्यकारी प्रधानाचार्य सुरेंद्र पुंडीर ने कहा कि दूरदराज क्षेत्र की पंचायत से संबंध रखने वाली कृतिका ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा है।◆◆◆

पैराग्लाइडिंग एक्यूरैसी वर्ल्ड कप में भाग लेने वाली पहली भारतीय पायलट बनी हिमाचल की बेटी

हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला के जोगिंद्रनगर के अंतर्गत आते ट्रामट गांव की अलीशा कटोच पैराग्लाइडिंग एक्यूरैसी वर्ल्ड कप में भाग लेने वाली पहली भारतीय पायलट बन गई हैं। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला के जोगिंद्रनगर के अंतर्गत आते ट्रामट गांव की अलीशा कटोच पैराग्लाइडिंग एक्यूरैसी वर्ल्ड कप में भाग लेने वाली पहली भारतीय पायलट बन गई हैं। अलीशा कटोच ने बताया कि 2019 में जब वह 16 वर्ष की थी तो उन्होंने अपने परिवार को बिना बताए अपने खर्च पर पैराग्लाइडिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

हिमाचल के छोटे से गांव से सेना की बुलंदी तक पहुंचने वाली कर्नल सपना राणा अब पहचान की मोहताज नहीं हैं। @thebetterindia ने अपनी 'वुमन ऑफ इम्पैक्ट' सीरीज़ के तहत हाल ही में कर्नल सपना राणा के प्रेरणादायक सफर को अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम पेज पर शेयर किया है।

जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन

महाभारत के युद्ध से पहले श्रीकृष्ण शांति दूत बनकर महाराजा धृतराष्ट्र से मिले और युद्ध टालने का प्रयास किया, लेकिन दुर्योधन ने उनका अपमान किया। श्रीकृष्ण ने कौरवों का आतिथ्य अस्वीकार कर विदुर के घर सात्विक भोजन ग्रहण किया। यह घटना दर्शाती है कि जैसा हम भोजन करते हैं, वैसा ही हमारा विचार और मन होता है। हिंदू धर्म और संस्कृति में भोजन पकाने, परोसने और खाने के नियम इसीलिए बनाए गए हैं, ताकि हमारा स्वास्थ्य और मानसिक शुद्धता बनी रहे।

प्रकृति ने सभी प्राणियों के लिए उनके शरीर और स्वभाव के अनुसार भोजन और औषधीय वनस्पतियाँ प्रदान की हैं। इनका सही उपयोग जीवन को संतुलित रखता है, जबकि दुरुपयोग से रोग उत्पन्न होते हैं। आजकल, जंक फूड और फास्ट फूड का अत्यधिक सेवन होने से समय, पवित्रता और स्वच्छता का अभाव हो गया है। इसके कारण विभिन्न आयु वर्ग के लोग बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं। इन बीमारियों के इलाज के लिए दवाइयों का सेवन और अन्य उपचार भी आवश्यक हो जाते हैं, जो आगे चलकर और समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए, भोजन की शुद्धता और पवित्रता पर ध्यान देना अनिवार्य है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी, बार-बार और अधिक भोजन करने से शरीर की ऊर्जा पाचन में लग जाती है। यही कारण है कि जो लोग मानसिक कार्यों में अधिक ऊर्जा खर्च करते हैं, उनकी पाचन क्रिया कमजोर हो जाती है। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन भी अल्प आहार ग्रहण करते थे। कणाद ऋषि और निंबार्क जैसे संत भी साधारण भोजन से स्वस्थ रहते थे। व्रत और उपवास का अर्थ है कि जब पेट खाली हो, तो हमारी सारी ऊर्जा मानसिक चिंतन में लगती है, जिससे मस्तिष्क और पेट दोनों का विकास होता है। वर्तमान में, फास्ट फूड और जंक फूड का सेवन बढ़ गया है, जिससे लोग मोटापे और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त हो रहे हैं। इसलिए, हमें अपने आहार पर ध्यान देना चाहिए, संतुलित और स्वस्थ भोजन करना चाहिए, और फास्ट फूड से बचना चाहिए। इससे हम शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं।◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

के.आर. भारती

1. शक्ति देवी छतराड़ी की प्रतिमा चम्बा के किस राजा ने बनवाई थी?
   (ए) आदित्य वर्मन (बी) बाला वर्मन (सी) मेरु वर्मन (डी) अजेय वर्मन
2. किन्नौर एक अलग जिला बनने से पहले किस जिला का भाग था?
   (ए) महासू (बी) शिमला (सी) लाहौल-स्पिति (डी) सोलन
3. हिमाचल प्रदेश में सबसे पहले बसने वाले लोग कौन थे?
   (ए) दस्यु (बी) कोल (सी) खस (डी) इनमें कोई नहीं
4. महमूद गजनी ने नगरकोट पर कब आक्रमण किया?
   (ए) 1006 AD (बी) 1007 AD (सी) 1008 AD (डी) 1009 AD
5. रामपुर बुशहर के किस राजा के समय (डूम) आंदोलन हुआ?
   (ए) महेंद्र सिंह (बी) राम सिंह (सी) शमशेर सिंह (डी) पद्म सिंह
6. निम्न में से कौन जोड़ा सही नहीं है?
   (ए) मणिमहेश कैलाश-भरमौर (बी) किन्नर कैलाश-किन्नौर
   (सी) सिकंदर धार - मंडी (डी) कोट धार-सोलन
7. हिमाचल का अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) कहां स्थित है?
   (ए) ऊना (बी) बिलासपुर (सी) हमीरपुर (डी) कांगड़ा
8. 2011 की जनगणना के अनुसार हिमाचल प्रदेश के किस जिला की जनसंख्या वृद्धि नकारात्मक (नेगेटिव) है?
   (ए) शिमला (बी) सिरमौर (सी) लाहौल स्पीति (डी) किन्नौर
9. हिमाचल प्रदेश की सीमा निम्न में से किस राष्ट्र के साथ लगती है?
   (ए) नेपाल (बी) चीन (सी) भूटान (डी) म्यांमार
10. हिमाचल प्रदेश की राजभाषा कौन है?
    (ए) हिंदी (बी) संस्कृत (सी) पहाड़ी (डी) अंग्रेजी

उत्तर : 1 (c- मेरु वर्मन) 2 (a- महासू) 3 (b-कोल) 4 (d-1009 AD) 5 (c-शमशेर सिंह) 6 (d-कोटधार-सोलन) 7 (b-बिलासपुर) 8 (c- लाहौल स्पिति) 9 (b- चीन) 10 (a- हिंदी)

चुटकुले

शिक्षक : तुम इतने दिन स्कूल क्यों नहीं आए?

छात्र : क्योंकि मैंने देखा, स्कूल में 'सिर्फ अंडरस्टैंडिंग वालों को अटेंडेंस मिलेगा' लिखा था!

◆◆◆

शिक्षक : बताओ, घर और स्कूल में क्या फर्क है?

छात्र: घर में मम्मी डांटती हैं और स्कूल में शिक्षक डांटती हैं, फर्क सिर्फ यूनिफॉर्म का है!

◆◆◆

शिक्षक: तुम्हें सजा क्यों मिली?

छात्र: नहीं मालूम, मुझे बस इतना पता है कि मैं पहली बार क्लास में हंस रहा था, और शिक्षक कह रही थी 'तुम हंस क्यों रहे हो?'

◆◆◆

शिक्षक: बताओ, सबसे बड़ी कठिनाई क्या है?

छात्र : गणित के सवाल समझ में नहीं आना!

◆◆◆

शिक्षक : यदि कोई तुमसे एक बकरी मांगता है, तो तुम क्या दोगे?

छात्र: एक और बकरी, क्योंकि मेरी दो हैं!

हिम फिल्मोत्सव-2024

19-20 अक्टूबर

धर्मशाला

CATEGORY :

Documentary	Short Films	Campus Films
30 to 45 min.	18 to 25 min.	05 to 20 min.

THEMES

1. ऐतिहासिक गौरवशाली हिमाचल
2. हिमाचल की कला संस्कृति और परम्पराएं
3. हिमाचल के संदर्भ में देश सेवा और बलिदान
4. देवभूमि हिमाचल की देव परम्परा
5. स्वतंत्रता संग्राम में हिमाचल की भूमिका
6. प्रदूषणमुक्त हरित हिमाचल
7. वोकल फॉर लोकल
8. हिमाचल की सशक्त नारी
9. खेलों में हिमाचल
10. संस्कारित हिमाचली रिश्ते
11. हिमाचल के विविध लोकनायक
12. आधुनिक और उन्नत हिमाचल
13. हिमाचल -जल, पल और कल
14. साहसिक पर्यटन और हिमाचल
15. शिक्षा के क्षेत्र में हिमाचल का योगदान
16. हिमाचल की प्राचीन सभ्यताएं

नियम

1. फिल्म/वृत्त चित्र की भाषा हिमाचली या हिंदी में हो
2. फिल्म/वृत्त चित्र दिए गए विषयों पर ही होनी चाहिए।
3. फिल्म/वृत्त चित्र प्रतिभागियों की मूल प्रति होनी चाहिए, इसके लिए एक प्रमाण पत्र देना होगा।
4. .फिल्म/वृत्त चित्र में कोई भी अश्लीलता नहीं होनी चाहिए।
5. आई.पी.आर. नियमों की पालना की जिम्मेदारी निर्माता की होगी।
6. फिल्म/वृत्त चित्र का पहले कहीं सार्वजनिक प्रदर्शन न हुआ हो।
7. संचालन समिति से कोई भी इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकता।
8. फिल्म संस्थान में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की फिल्म प्रोफेशनल श्रेणी में पंजीकृत होगी।
9. किसी भी विवाद का निर्णय हिम सिने सोसायटी एक सोच शिमला द्वारा अंतिम और मान्य होगा।
10. फिल्म / वृत्त चित्र जमा करने की अंतिम तिथि 30 सितम्बर 2024 होगी

Awards Worth

₹ 5,00,000

रजिस्ट्रेशन फीस

प्रोफेशनल शॉर्ट/
डॉक्यूमेंट्री फिल्म - 750/-
नॉन प्रोफेशनल शॉर्ट फिल्म - 500/-
रजिस्ट्रेशन फीस J&K Bank
A/c No. 0120040100005561
IFSC:JAKA0SHIMLA में जमा करें
रजिस्ट्रेशन फीस जमा करते समय अपना नाम, कैटेगरी, फिल्म का नाम जरूर लिखें।

फिल्म भेजें

1. शुल्क जमा करने की प्रति
2. मोलिकता का संस्थान द्वारा जारी प्रमाण पत्र
3. फिल्म का गूगल ड्राइव लिंक हमें hcshimachal@gmail.com पर मेल करें

नोट - एक फिल्म से एक एंट्री मान्य होगी

आयोजक

हिम सिने सोसायटी एक सोच **शिमला, हिमाचल प्रदेश**

अधिक जानकारी के लिए जाएं :-

सम्पर्क सूत्र : भारती कुठियाला : 98822-06124, संजय सूद : 9418065293, कपिल :98058 18646, अंकुर कौंडल : 98175 59023

हमारा साझा विज़न:

2023-24 तक 5000 मेगावाट, 2030 तक 25000 मेगावाट तथा 2040 तक 50000 मेगावाट

प्रचालनाधीन परियोजनाएं:

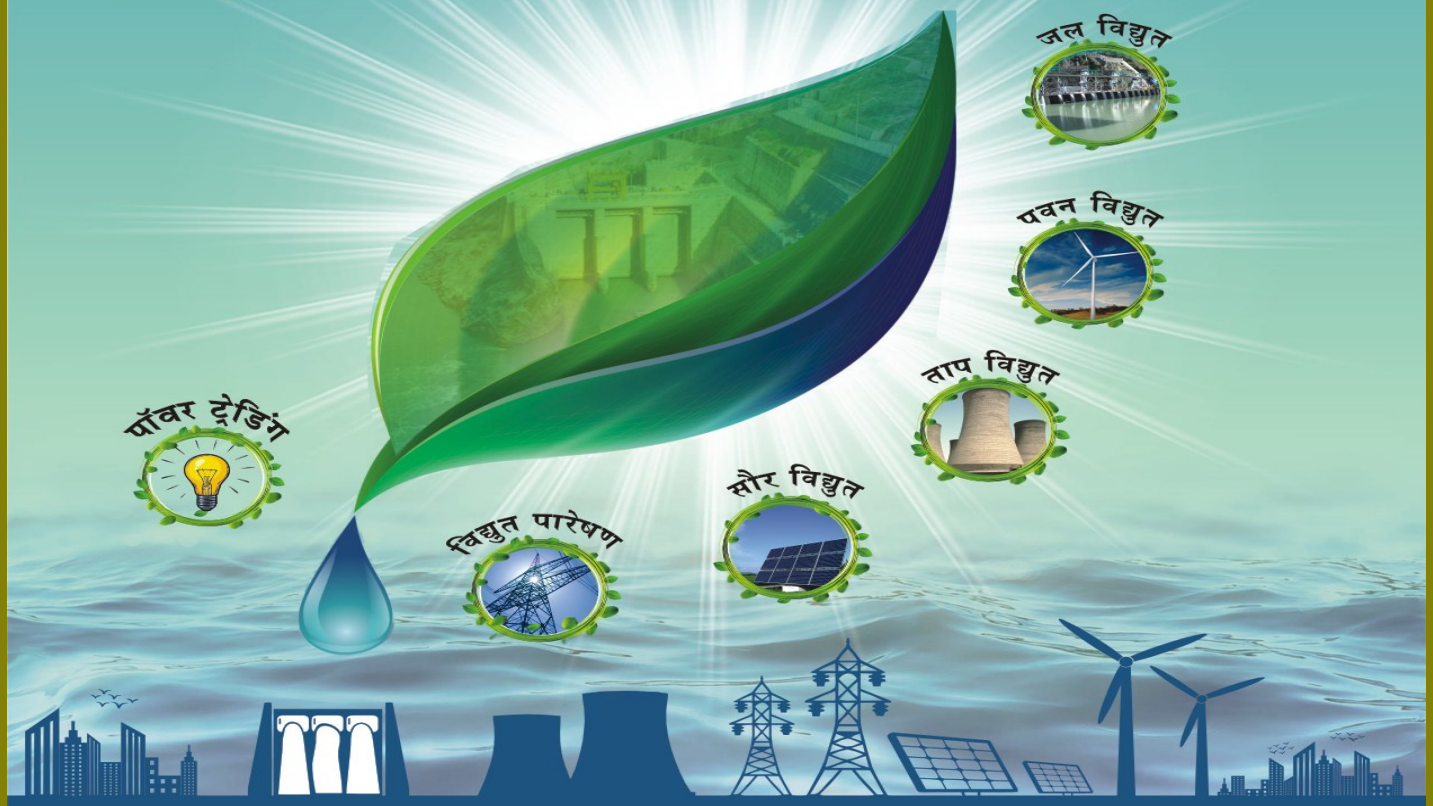

- 1500 मेगावाट नाथपा झाकड़ी जल विद्युत स्टेशन
- 412 मेगावाट रामपुर जल विद्युत स्टेशन
- 47.6 मेगावाट खिरवीरे पवन विद्युत स्टेशन
- 5.6 मेगावाट चारंका सौर पीवी विद्युत स्टेशन
- 50 मेगावाट साडला पवन विद्युत स्टेशन
- एनजेएचपीएस में 1.31 मेगावाट ग्रिड कनैक्टिड सौर विद्युत स्टेशन
- 75 मेगावाट परासन सौर विद्युत स्टेशन
- 400 केवी, डीं/सीं क्रास बार्डर ट्रासमिशन लाईन (भारतीय हिस्सा)

विकासाधीन परियोजनाएं:

- भारत के विभिन्न राज्यों में जल विद्युत परियोजनाएं
- नेपाल में जल परियोजनाएं
- बिहार में ताप परियोजना
- भारत के विभिन्न राज्यों में सौर विद्युत परियोजनाएं
- ट्रांसमिशन लाइनों का निष्पादन

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited

(भारत सरकार एवं हिमाचल प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)
एक 'मिनी रत्न' एवं शेड्यूल 'ए' पीएसयू । एक आईएसओ 9001:2005 प्रमाणित कम्पनी

पंजीकृत कार्यालय : एसजेवीएन लिमिटेड, शक्ति सदन, कॉरपोरेट मुख्यालय, शनान, शिमला–171006, हिमाचल प्रदेश (भारत)
एक्सीपीडाइटिंग कार्यालय : ऑफिस ब्लाक, टॉवर–1, 6वीं मंजिल, एनबीसीसी कॉम्पलैक्स, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली–110023 (भारत)
वेबसाइट : www.sjvn.nic.in

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, प्रथम तल नाभा हाउस,
शिमला–171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में
____

मातृवन्दना
प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :